

النظر الی وجه علی عبادة(الحديث)

शाने अली

(कुरआन व हदीस की रोशनी में)

मुरत्तिब

मुहम्मद मन्ज़र मुस्तफा नाज़ अशरफी

खतीबो इमाम
सुन्नी जामा हनफिया मस्जिद
मोहल्ला टीबा, मकराना।

मुदर्रिस
जामिया हनफिया नजमुल उलूम
जामिया रोड, मकराना।

नाशिर
नौजवानाने अहले सुन्नत
सुन्नी जामा हनफिया मस्जिद, मोहल्ला टीबा, मकराना।



नाम किताब	:	शाने अली (क़ुरआनो हदीस की रोशनी में)
मुअल्लिफ़	:	मुहम्मद मन्ज़र मुस्तफा नाज़ अशरफी
तसहीह व तक़दीम	:	हज़रत मौलाना मु ती मुहम्मद शाहिद रज़ा बरकाती (आनन्द, गुजरात)
नज़रे सानी	:	हज़रत अल्लामा मु ती मुहम्मद अब्दुल क़ादिर रज़वी (खतीब व इमाम सुन्नी मुहम्मदी मस्जिद मकराना।)
		हज़रत अल्लामा मौलाना जमशेद अहमद मिस्बाही मुदर्रिस जामिया हन्फिया नजमुल उलूम, मकराना।
प्रुफ रीडिंग	:	हज़रत मौलाना मुहम्मद हसन रज़ा अशरफी (खतीब व इमाम क़लन्दरी मस्जिद मकराना)
		मोलवी अफज़ल हुसैन अशरफी (जामिया अशरफिया मुबारकपुर)
		मोलवी इम्तियाज़ आलम अशरफी (अहमदाबाद)
कम्पोज़िग व प्रिंटिंग	:	गुलाम मुहीयु ीन मिस्बाही प्रोपराईटर हाईटेक कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, जयपुर-9887895264
सने इशाअत	:	1435 हि./2013 ई.
ज़ख़ामत	:	128 पेज
तादाद	:	1000
क़ीमत	:	40 रुपये।
नाशिर	:	नौजवानाने अहलेसुन्नत सुन्नी जामा हनफिया मस्जिद मोहल्ला टीबा, मकराना

मिलने के पते

1. सुन्नी जामा हन्फिया मस्जिद, मोहल्ला टीबा, मकराना (नागौर)
2. जामिया हनफिया नजमुल उलूम, मकराना।
3. बरकाती बुकडिपो, गोड़ाबास, मकराना।
4. क़ादरी किताब घर, मीनारा मस्जिद, मकराना।
5. अल-मजमउस्सफा शोबा-ए-नशरो इशाअत जामिया फातिमतुज्ज़हरा नापा आनन्द गुजरात
6. मदरसा अहले सुन्नत ज़हूरूल इस्लाम, मोहल्ला सरायवालान, घाटगेट,जयपुर

इन्तिसाब
व ईसाले सवाब

जद्दे करीम हज़रत हाफिज़ व क़ारी **मुहम्मद तौहीदुद्दीन** (मरहूम)
(वफात 11 शव्वाल 1424 हि॰ मुताबिक़ 25 नवम्बर 2004 बरोज़ जुमेरात)
के नाम जिनकी निगाहे फैज़ ने शऊर व आगही की तौफीक़ बख्शी।

जद्दा मुहतरमा **साइमा बानो** मरहूमा
(वफात 4 जमादिल उखरा 1428 हि॰ मुताबिक़ 21 जून 2007 बरोज़ जुमेरात)
के नाम जिनकी दुआऐ शफक़त ने मुझे इल्मी ज़िन्दगी अता की।

मुशिफक़ मुरब्बी वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रत अल्लामा मौलाना
मुहम्मद मन्सूरूल हसन अशरफी खलीफा-ए-अशरफी रहमतुल्लाहि तआला अलैह
(वफात 19 मुहर्रम 1428 हि॰ मुताबिक़ 8 फरवरी 2007 बरोज़ जुमेरात)
के नाम जिनकी हाला नीम शबी व दुआऐ सहरगाही ने मुझे इल्मे मुस्तफा से सरफराज़ किया, ज़माना-ए-तालिबे इल्मी में ज़ाहिरी सायाऐ आतिफत उठ जाने के बाद बातिनी व रूहानी सायाऐ आतिफत व दुआऐ शफक़त से हमेशा मुझे शर्फयाब फरमाया।
''गर क़बूल उफदत ज़हे इज़्ज़ो शरफ''

फक़त
मुहम्मद मन्ज़र मुस्तफा नाज़ अशरफी
उफिया अन्हू

फिहरिस्त

मन्क़बत दर शाने अली رضي الله عنه

खामोश हैं तो दीन की पहचान अली हैं।
गर बोलें तो लगता है कि कुरआन अली हैं।।

कुरआन तो देता है हमें दअ़वते ईमान।
ईमान ये कहता है मेरी जान अली हैं।।

उम्मत में नुमायां हैं सभी अहले विलायत।
अस्हाबे विलायत के भी सुलतान अली हैं।।

उस बाग़े नबुव्वत की कली फातिमा ज़हरा।
हसनैन हैं दो फूल तो गुलदान अली हैं।।

है मद्दे मुक़ाबिल को भी पीने की इजाज़त।
सु फैन के मौक़े पे भी ज़ीशान अली हैं।।

मैं शमऐ शबिस्ताने विलायत कहूं किसको।
दिल बोल उठा शमऐ शबिस्तान अली हैं।।

....

पेशकश: **मौलाना जमशेद अहमद मिस्बाही**
मुदर्रिस जामिया हनफिया नजमुल उलूम, मकराना

तक़रीज़े जलील

जामऐ माकूलातो मन्कूलात हज़रत अल्लामा मौलाना
मुफ्ती मुहम्मद फारूक़ आज़म साहब क़िबला शम्सी
नायब शैखुल हदीस दारूल उलूम शैख अहमद खट्टू अहमदबाद (गुजरात)

ज़ेरे नज़र तालीफ मुसम्मा ''शाने अली कुरआनो हदीस की रोशनी में'' हज़रत मौलाना हाफिज़ व क़ारी मुहम्मद मन्ज़र मुस्तफा नाज़ अशरफी की वसीउल मुताला व इदराक और कुशादा फहमी का खूबसूरत नतीजा है। मुअल्लिफे किताब बे हद खलीक़, मिलनसार और इन्तेहाई मुतहर्रिक, फअ्आल शख्सियत हैं, माशा अल्लाह बेहतरीन आलिम फाज़िल और तहक़ीक़ फिल फिक्ह से दिलचस्पी रखने वाले हैं, हमा वक्त किसी मी काम के लिए तैयार रहते हैं, इस पर तुर्रा ये कि अगर उनके पास इल्म है तो अपने इस इल्मी मैदान में भी बहुत कुछ करने का जज़्बा रखते हैं, तहरीर की मानवीयत का अन्दाज़ा मुहर्रिर की सलाहियत और वुसअते मुताला से होता है, अरबी का मक़ूला है। ''**قــــدر الـمـولّف بـقـدر المولِف**'' किताब का मुसन्निफ जितना अज़ीम हो उतनी ही किताब अज़मत की हामिल होती है। मैंने इस किताब का मुताला बनज़रे ग़ाइर किया तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मौसूफ ने हज़ारों औराक़े गुल की खुश्बू एक ही इत्रदान में रख दी है। जिसमें उन्होंने शाने अली के तअल्लुक़ से नादिर मालूमात बातें यकजा कर दी हैं और लुत्फ ये है कि मुसन्निफ मौसूफ ने अपनी क़ाबिलियत का जौहर दिखाते हुऐ किताब को हवाला जात से मुज़ैयन फरमाया है।

आफरीं सद आफरीं लाइक़े तहसीन ये कि जिस क़द्र फक़ीर की नज़र से गुज़रा मोतमद व मुस्तनद पाया है। अल-हासिल ये तालीफ दीनी व दुन्यवी मालूमात का अनमोल खज़ाना है। अल्लाह तआला से दुआ है कि इस तालीफ और उनकी इस सई-ए-जमीला का मक़बूले आम व खास कर दे और मुअल्लिफ और उनके आबा व अजदाद को दारैन की नेमतों से माला माल फरमाऐ। और मुअल्लिफ को सेहत व तन्दुरुस्ती अता फरमाए और क़लम व क़िरतास में और भी ज़ोर अता फरमाऐ। आमीन

मुहम्मद फारूक़ आज़म शम्सी
खादिमे तदरीस व इ ता दारूल उलूम शैख अहमद खट्टू अहमदाबाद

तअस्सुरे जमील

मेअमारे कौम व मिल्लत, हज़रत अल्लामा
अलहाज **क़ारी मुहम्मद शम्सुद्दीन** साहब क़िबला क़ादरी
ख़तीबो इमाम सुन्नी जामा मस्जिद व सरबराहे आला जामिया हन्फिया नजमुल उलूम, मकराना (नागौर)

ज़ेरे नज़र किताब ''शाने अली'' अज़ीज़ुल कद्र हज़रत मौलाना हाफिज़ क़ारी मन्ज़र मुस्तफा नाज़ अशरफी सल्लमहु की ग़ालिबन तीसरी कोशिश है, फक़ीर क़ादरी ने मुकम्मल किताब का मुताला किया है। अज़ीज़े गिरामी क़द्र ने बहुत सलीस अन्दाज़ में ये किताब तर्तीब दी है कि हर खास व आम की समझ में आ जाये, आयाते कुरआनिया और अहादीसे नबविया से मुज़ यन ये किताब नफऐ खलाइक़ का बाइस बनेगी।

मौलाना मौसूफ जवाँ साल, पुर अज़्म, बा-हिम्मत, मुखलिस होने के साथ साथ अपने पहलू में मिल्लते इस्लामिया की इस्लाह के लिए दर्दमन्द दिल रखते हैं जिसका इज़हार वक़्तन फौक़्तन इस्लाही प्रोग्रामात के ज़रिये होता रहता है। शहरे मकराना के अज़ीमुश्शान दारूल उलूम जामिया हनफिया नजमुल उलूम से मौसूफ की हि ज़ व क़िरअत और इब्तेदाई दर्से निज़ामी की तालीम रही है और आज वह जामिया हाज़ा में ही दर्सो तदरीस की ज़िम्मेदारी बहुस्नो खूबी निभा रहे हैं, इमामत व खिताबत के साथ शाइराना ज़ौक़ भी रखते हैं।

अल-हासिल! ऐसी किताबों की ज़रूरत मिल्लते इस्लामिया को है मैं दुआ करता हूँ हमारे नौजवान उलमाऐ किराम इस तरफ क़दम बढ़ाऐं जिस से मिल्लत फ़ैज़याब हो खूदाऐ क़दीर इस किताब को मक़बूले आम फरमाए। आमीन बिजाहि सैयदिल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

गदा-ए-औलिया
शम्सुद्दीन क़ादरी
मकराना

तक़दीम

नाज़िशे फि ो फन हज़रत अल्लामा मौलाना हाफ़िज़ व क़ारी
मु ती **मुहम्मद शाहिद रज़ा** साहब किबला बरकाती शम्सी
(शैख़ुल हदीस जामिया फातिमतुज्ज़हरा नापा, आनन्द गुजरात)

आफाक़ी व हमागीर मज़हब का नाम इस्लाम, इसके मानने वालों का नाम मुसलमान। और क़ौमे मुस्लिम की इस्लामी ज़िन्दगी, मआशी ज़िन्दगी, मुआशरती ज़िन्दगी, समाजी ज़िन्दगी और सियासी ज़िन्दगी का दस्तूर व क़ानून और माखज़े असलिया कुरआन व हदीस है दुनिया के जुमला उलूम व फुनून इसी बहरे ना–पैदा किनार की पैदावार हैं। एलाने आम है। "**تبيانا كل شئى**" लेकिन हर एक फर्द इस मुअजिज़ व मुक़ स कुरआन का समझ ले? ऐसा मुम्किन नहीं। इस लिए कि इस बहरे बेकरां का मश्शाक़ी गोता ज़न भी अपनी ताक़त व हैसियत के मुताबिक़ ही इसमें से कुछ निकाल पाता है। और ये ज़रूरी भी नहीं कि वह निकाली हुई चीज़ असली मोती हो। वाज़ेह एलान है "**يضل به كثيرا**" "**ويهدى به كثيرا**"

अहादीसे रसूल में भी यही मामला है कि सिक़ा व उदूल, सहीह, ज़ईफ, मक़बूल व मौज़ू, नासिख व मन्सूख और मरातिब व तुरक़ से जैसे नाजुक रिश्ते से नाबलद होने की वजह से सहीह मफाहीम पेश करना सबके बस की बात नहीं।

आँख वाला तेरी जोबन का तमाशा देखो।
दीदा–ए–कोर को क्या नज़र आये क्या देखो।।

कुरआन व अहादीसे रसूल के ज़खाइर व दफातिर तराजिम, मतालिब व मफाहिम, मसादिक़ व रवाबित,तक़ाज़ाऐ हालात और हालात की मुनासिबत का सही इल्म के लिए आला ज़हन, कामिल फहम व इदराक, सफाऐ कल्ब, रब्ते मखलूक़ खौफे खुदा व इश्क़े रसूल ज़रूरी अनासिर हैं इनसे खाली होने की सूरत में ईमान जाने और गुमराह होने का अन्देशा है। यही वजह है कि इन ज़रूरी

अनासिर से कोरे होने की वजह से राफज़ी, खार्जी, क़द्री, जबरी, मुअतज़ली जैसे नाम निहाद नये नये फिरक़ों ने जन्म लेने की कोशिश की। और उनकी तफरक़ा बाज़ी ने इस्लाम की फज़ा को मसमूम व मापाश करने की कोशिश की लेकिन सहाबाऐ किराम व उलमाऐ किबार की मुक स जमाअत ने हमेशा के लिए इस कोशिश को नाकाम कर दिया, जिसकी बिना पर वह सब या तो खारिज अज़ ईमान हो गये या गुमराह हो गये।

रसूले बा वक़ार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने जांनिसार व वफादार सहाबा–ए–किराम की ज़ाहिरी व बातिनी ऐसी उम्दा तर्बियत फरमाई कि तारीखे इन्सानियत में इसकी नज़ीर नहीं मिलती बल्कि सहाबा–ए–किराम नबी दो जहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा हैं। जैसा कि **الفروق للقرآن** पेज 304 पर है। **لو لم يكن رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم معجزة الا اصحابه لكفره فى اثبات نبوته.** यानी अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा सहाबा के एलावा न होता तो इस्बाते नुबूव्वत के लिए वही काफी हो जाता।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इस अज़ीम मोजिज़े का तज़किरा–ए–जमील सैर व तवारीख का लाज़मी व अहम हिस्सा है। इसके अलावा कुरआन व अहादीस में सहाबा–ए–किराम के फज़ाइल व मनाक़िब पूरे आब व ताब के साथ रोशन व अयां हैं। इन्हीं गिरोह में एक नुमायां नाम अहले एबा और पंजतने पाक का मुम्ताज़ खास फर्द हज़रते अली की ज़ाते बा–बरकत है। ज़ाते अली व सिफाते अली का क्या कहना? अली वह हैं जिनके फज़ाइल व मनाक़िब में सबसे ज़्यादा अहादीस मरवी हैं। वह अली जो बाबुल इल्म हैं, बाबुल हिकमत हैं, मजमउल फज़ाइल वल–कमालात है।, मज़हरुल अजाइब वल–गराइब है। शाने अली में बहुत कुछ लिखा जा चुका, लिखा जा रहा है लिखा जायेगा। इस सिलसिले की कड़ी में जुड़ने के लिए इल्मी हलक़ों में से एक जवां साल मुहर्रिर पीराना अज़्म, शुजाई जिगर लेकर एक हसीन व खूबसूरत गुलदस्ता ''शाने अली कुरआन व हदीस की रोशनी में'' की शक्ल में लेकर हाज़िर होने की सआदत हासिल कर रहे हैं किताबे मम्दूह के मुअल्लिफ

हज़रत मौलाना हाफिज़ व क़ारी मु ती मुहम्मद मन्ज़र मुस्तफा नाज़ अशरफी हैं जो मेरे बिरादरे सगीर व हर दिल अज़ीज़ हैं। नौ उम्र व नौ फारिग़ है, मुक़र्रिर है, मुहर्रिर हैं, मुदर्रिस हैं, इन्तेज़ामी उमूर की सलाहियत से लैस हैं, खिदमते दीन व खिदमते खल्क के जज़्बा से सरशार हैं। फिल-हाल मकराना राजस्थान की सर ज़मीन पर जामिया हनफिया नजमुल उलूम के मुम्ताज़ मुदर्रिस हैं। और इसी शहर के सुन्नी जामा हनफिया मस्जिद के पेश इमाम व खतीब हैं।

मुअल्लिफ मौसूफ अर्ज़ी क़ब्ल दो किताबें क़ौम के हवाले कर चुके हैं। जिसमें से एक किताब बनाम " मिस्बाहे शरीअत" मेरी नज़र से गुज़री है। इस किताब की नज़रे सानी व तसहीह के लिए मौलाना मौसूफ ने बज़रिये फोन इसरार व पैहम के साथ वादा करवा लिया, बज़रिये डाक भेजकर जल्द अज़ जल्द तसहीह का मुतालबा करना शुरू कर दिया। साथ ही साथ तअस्सुरात का भी मुतालबा शुरू हो गया। और मेरा हाल ये है कि दर्स व तदरीस की ज़िम्मेदारी और तालीमी इन्तेज़ामी उमूर का बोझ हमेशा सर पर साया फिगन रहता है लेकिन वादा खिलाफी भी तो नहीं कर सकता था। इस लिए मौलाना मौसूफ की फरमाइश के मुताबिक़ वक़्त निकाल कर तीन नशिस्त में अज़ इब्तेदा ता इन्तेहा सरसरी नज़र से देखा मगर हवाला जात की तस्दीक़ की तरफ रूजूअ ना कर सका। क्योंकि ये अज़ीम काम मुझ जैसे कम इल्म, व हैचमदां की बस की बात नहीं, ज़रूरत के मुताबिक रब्त व तअल्लुक, तशरीह व खुलासा र ो बदल वगैरह के लवाज़िम से लैस करके इस्लाह कर दी गयी है।

अब इस किताब में क्या नया पन है? वह आप मुताला के बाद खुद ही फैसला कर लेंगे लेकिन इस किताब की तौसीफ में इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि इस में नया अन्दाज़ है, नया मज़मून है, जिसे मौलाना मौसूफ ने अहले इल्म हज़रात की बारगाह में पेश किया है। किताबे मौसूफ में मौलाना मौसूफ ने तक़रीबन पन्द्रह आयात, पन्द्रह अहादीसे मरफ़ूआ, पन्द्रह अहादीसे मौक़ूफा की रोशनी में इस बात को साबित करने की कोशिश की है कि उनकी मिस्दाक़ या तो बशमूल सहाबा-ए-किराम हज़रते अली है या तन्हा हज़रते अली है। या इस पर सहाबा-ए-किराम के अमल के साथ हज़रते अली का भी अमल है। या तन्हा

हज़रते अली के अमल करने का शर्फ हासिल है। ग़ालिबन इसी मुनासिबत के सबब से किताब का नाम "शाने अली कुरआन व हदीस की रोशनी में " इस्म बा मुसम्मा की मुनासिबत से मज़मून की तकमील के बाद मुअल्लिफ ने हज़रते अली की ज़र्री अक़वाल ब-उनवान "अक़वाले अली ब-ज़बाने अली" को भी ज़ीनते किताब बनाया है।

इस अज़ीम काम पर समीमे क़ल्ब से अज़ीज़े असअद हज़रत मौलाना मन्ज़र मुस्तफा सल्लमहू को मुबारकबाद पेश करता हूँ और दुआ गो हूं कि रब तआला और ज्यादा ज़ोरे क़लम व ज़ोरे बयान अता फरमाए। मज़कूरा चन्द सुतूर मौलाना मौसूफ के बेजा इसरार और बे इन्तेहा मुहब्बत की बुनियाद पर कमाले उजलत के साथ सुपुर्दे क़िरतास हो गये बावजूदे कि अपनी कम मायगी और बेइल्मी का मुझे एहसास है।

"गर कबूल उफदत ज़हे इज़्ज़ो शरफ"

दुआ गो

मुहम्मद शाहिद रज़ा बरकाती उफिया अन्हु

खादिम इ ता व तदरीस जामिया फातिमतुज़्ज़हरा (गुजरात)

मुझे कुछ कहना है अपनी ज़बान में

करूं खिदमते लौह व क़लम कुछ ऐसी तमन्ना है।
कि चले हर आहू सूऐ हरम कुछ ऐसी तमन्ना है।
बरोज़े हश्र जब जन्नत पुकारे नेकू कारों को।
मुझे बख्शवाये नाज़ उनका कमर कुछ ऐसी तमन्ना है।

आज से तक़रीबन तीन साल क़ब्ल मेरी दो किताब ''मिस्बाहे शरीअ़त'' ''क़ुरआन और साहिबे क़ुरआन'' मन्ज़रे आम पर आई, रब्बे करीम के फज़्ल व करम और सैयदुल मरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की रहमते बेकरां से मेरी अदना काविश को अवामी सतहों व इल्मी हलक़ों में मक़बूलियत का शर्फ हासिल हुआ।

फिर मैं अपने करम फरमा वालिदैन व बुज़ुर्गाने दीन व जुमला असातिज़ा-ए-किराम की दुआओं के साये तले पन्द्रह आयाते क़ुरआनी तक़रीबन तीस अहादीसे मरफ़ूआ व मौक़ूफा और तक़रीबन 107 अक़्वाले अली पर मुश्तमिल मुस्तनद किताबों के हवाले के साथ एक नायाब गुलदस्ता बना ''शाने अली क़ुरआन व हदीस की रोशनी में'' अरबाबे ज़ौक़ व असहाबे शौक़ की खिदमत में हाज़िर करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ। इस उम्मीद के साथ कि मेरी यह अदना कोशिश आपके चेहरों पर मुस्कुराहट, अज़हान व क़ुलूब में नूरे ईमान की जगमगाहट लाने का सबब बन जाये और मेरे लिए **ان الحسنات يذهبن السيئات** के मिस्दाक़ बन जाये।

पेशे नज़र किताब अगरचे मुकम्मल सवानेहे अली पर मुश्तमिल नहीं, मगर फिर भी शाने अली को उजागर करके क़ौम व मिल्लत के अन्दर इस्लाह करने की जि ो जहद की गयी है।

मैं उन तमाम हज़रात का तहे दिल से बेहद ममनून व मशकूर हूँ जिन्होंने अपने तास्सुरात को क़लमबन्द फरमाक क़ीमती औक़ात को तसहीहे किताब में सर्फ फरमाकर, किताब की तर्तीब से लेकर तबाअत तक, नशरो इशाअत के हर मरहले में अपने ज़र्री मशवरों और दुआओं से नवाज़ा।

खुसूसियत के साथ उस्ताजुल मुकर्रम हज़रत अल्लामा ''मु ती मुहम्मद फारूक़ आज़म साहब शम्सी'' (अहमदाबाद गुजरात), उस्ताजुल मुकर्रम हज़रत अल्लामा मौलाना ''मुहम्मद शम्सु ीन साहब क़ादरी'' (मकराना, राजस्थान), हज़रत अल्लामा ''मु ती मुहम्मद शाहिद रज़ा साहब बरकाती '' (आनन्द गुजरात), हज़रत अल्लामा मौलाना ''जमशेद अहमद साहब मिस्बाही'' (जामिया हनफिया मकराना), हज़रत अल्लामा मौलाना ''मु ती अब्दुल क़ादिर साहब रज़वी'' (मकराना) , हज़रत अल्लामा मौलाना ''हसन रज़ा साहब अशरफी'' (मकराना), हज़रत मौलाना ''गुलाम मुहीयु ीन साहब मिस्बाही'' (जयपुर), हज़रत अल्लामा मौलाना ''हसन रज़ा साहब क़ादरी'' (जयपुर) और जुमला नौजवानाने अहले सुन्नत मोहल्ला टीबा मकराना का तहे दिल से ममनून व मशकूर हूँ और दुआ गो हूँ कि मौला इनके इल्म व अमल में तरक़्क़ी अता फरमाऐ और इन्हें उम्रे खिज़्री से नवाज़े।

अखीर में जुमला अरबाबे इल्म व दानिश हज़रात से गुज़ारिश करूंगा कि अगर कोई खामी नज़र आये तो बचश्मे अ व मुलाहिज़ा फरमाकर इत्तेला दे दें, ताकि आइन्दा ऐडिशन में इसकी तलाफी हो जाये, लेकिन ज़बान तअ़न व तशनीअ़ के साथ न खोलें क्योंकि ये बुज़ुर्गो का शेवा नहीं है।

तालिबे दुआ
मुहम्मद मन्ज़र मुस्तफा नाज़ अशरफी उफिया अन्हु

शाने अली रदियल्लाहु अन्हु

इस नीलगूं अफलाक के शामियाने तले शोहरत पाने वालों का एक ला-मुतनाही सिलसिला जारी है कोई हुकूमत व सलतनत में मशहूर हुआ तो कोई सनअ़त व हिरफत में, कोई जाह व जलाल में उरूजे कमाल को पहुंचा तो कोई जूदो नवाल में, किसी ने जुरअत व बहादुरी की सरहदों को उबूर किया तो कोई हिम्मत व जवांमर्दी के मैदान में खेमाज़न, कोई इल्मो फज़्ल में यकताऐ रोज़गार हुआ तो कोई तक़्वा व परहेज़गारी का शादिर हुआ, इसी फेहरिस्त में एक ऐसी अज़ीमुल मर्तबत शख्सीयत है जो असदुल्लाह और मुर्तज़ा जैसे बेहतरीन लक़ब से मुलक़्क़ब हुऐ जिन पर इल्म व हिल्म, सब्रो क़नाअ़त, हिम्मत व शुजाअ़त, दिलेरी व बहादुरी जैसी खूबियाँ नाज़ करती हैं यानी इमामुल औलिया, सनदुल असफिया, ज़ीनतुल अतक़िया, शेरे खुदा, दामादे मुस्तफा हज़रते अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की ज़ाते सतूदा है। आपकी ज़ात जामिउस्सिफात और बहरुल ख़साइल थी। आप ज़ी-फहम आलिम, साहिबुर्राय फक़ीह और साहिबे बसीरत रहनुमा थे, जिनके क़ज़ाया और फैसलों का एहतराम खुद हज़रते उमर फारूक़े आज़म रदियल्लाहु अन्हु किया करते थे और अहम मामलात में उनकी राय के बग़ैर कोई फैसला सादिर नहीं फरमाते थे जैसा कि खुद मौलाऐ कायनात रदियल्लाहु अन्हु का बयान है:

''मैं खिलाफते सि ीक़ी व फारूक़ी में इन दोनों का मुआविन व मुशीर रहा और ता-हीने हयात उनकी हिमायत करता रहा।''

मौलाऐ कायनात हज़रते अ़ली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की ज़ाते बाबरकात में बेशुमार, अनगिनत औसाफे हमीदा और खसाइले महमूदा पाये जाते हैं, लेकिन इश्क़े रसूल और कुर्बते मुस्तफा के हवाले से आपने खुसूसी मुक़ाम पाया जहाँ तक किसी की भी रसाई न हो सकी। इस मुक़ाम पर

सैयदुना अली शेरे खुदा के उस क़ौल का ज़ि करना भी ज़रूरी है जिसमें आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत की लज़्ज़त आफरीं कैफियत को बयान करके इस बात को साबित कर दिया कि मुहब्बते रसूल का परचम सर बुलन्द करना और इताअ़ते मुस्तफा का चिराग़ दिल में रोशन रखना ही ईमान की बुनियाद है।

हज़रत क़ाज़ी अयाज़ मालिकी रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह फरमाते हैं कि :

'' सैयदुना अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम से दरया त किया गया कि आपको पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से किस क़द्र मुहब्बत थी, सैयदुना अली रदियल्लाहु अन्हु ने फरमाया:

كان والله احب الينا من اموالنا واولادنا واٰبائنا
وامهاتنا ومن الماء البارد على الظما.

तर्जमा: अल्लाह की क़सम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हमें अपने अमवाल, औलाद, आबा (वालिदैन), अजदाद(दादा, दादी वगैरह) और उम्महात (माँ) से भी ज़्यादा महबूब थे और किसी प्यासे को ठण्डे पानी से जो मुहब्बत होती है हमें आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से उससे बढ़ कर मुहब्बत थी।''

(अशिशफा जि.2, पेज-568)

इस वार तगी-ए-इश्क़े रसूल का आला मैयार मक़ामे सहबा में भी देखने को मिलता है कि सैयदुना अली ''अक़्ल कुर्बान कुन ब-पेशे मुस्तफा'' का मज़हर बनते हुऐ अपनी नमाज़े अस्र को महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आराम पर कुर्बान कर दिया जिसके सिले में उस महबूब ने अपने आशिके सादिक़ को ऐसी नमाज़े असर अदा करवाई जिस पर रहती दुनिया तक मुसल्लीन, साजिदीन व आबिदीन फख्र

करते रहेंगे, हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु में पाई जाने वाली तमाम खुसूसियात हुजूर अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कुर्बत व मइयत (साथ) का नतीजा है कि बचपन में आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की किफालत में रहे आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की वफात तक जुदा नहीं हुऐ। जैसा कि खुदा मौलाऐ कायनात का इरशाद है:

> ''क़रीबी रिश्तेदारी और खास मर्तबा के बाइस (वजह) जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नज़्दीक मेरा जो मुक़ाम है उसको तुम खूब जानते हो मैं अभी छोटा ही था कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझे गोद में लिया, मुझे अपने सीने से लगाते, आपका बिस्तरे मुबारक मुझे ढांपता, आपका जिस्मे अक्दस मुझ से मस होता आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मुझे अपना पसीना-ए-मुबारक सुंघाते। ''

(अल्लिमु औलादकुम मुहब्बता आले बैतिन्नबी पेज.146)

हज़रते अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की शान व मजिंलत का अन्दाज़ा इस हदीस से भी होता है जिसको उम्मे अतिया ने रिवायत किया है:

> ''हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर भेजा उसमे हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु भी थे, मैंने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखा कि आप हाथ उठाकर दुआ कर रहे थे कि या अल्लाह! मुझे उस वक्त मौत न देना जब तक मैं अली को बखैर व आफियत देख न लूं।''

(तिर्मिज़ी शरीफ पेज.643)

मज़्कूरा बाला सुतूर में इस बात का ज़ि है कि बचपन ही से हज़रते अली को मई यत (साथ) व सोहबत मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला

अलैहि वसल्लम की दौलते ला ज़वाल मयस्सर थी और ता-वक्ते विसाल आप इस नेअ्मत से मुस्तफीद हुऐ (फायदा हासिल किया) इस सोहबत का असर ये हुआ है कि आपने बचपन ही में नुजूले कुरआन के मनाज़िर का मुशाहिदा किया, मुक़ामे नुजूल और शाने नुजूल भी आप की निगाहों में रहा बल्कि उन अफराद व अशखास को भी आप जानते थे जिनके बारे में आयात का नुजूल हो रहा था यही वजह है कि तफसीरे कुरआन और नुजूल के अस्बाब के इल्म में आपने वह कमाल हासिल किया जो औरों का मुक र न बन सका।

जैसा कि हज़रत अल्लामा जलालु ीन सुयूती अलैहिर्रहमा ने इब्ने सअ्द के हवाले से तहरीर फरमाया है:

> '' हज़रते अली ने फरमाया कि बा-खुदा जितनी आयाते कुरआनी नाज़िल हुई हैं उन सबका मुझे इल्म है। मैं यह भी जानता हूं कि वह किस के लिए और कहाँ और किस तरह नाज़िल हुई। अल्लाह तआला का लाख लाख एहसान है कि उसने मुझे क़ल्बे सलीम, अक़्ल व शऊर और ज़बाने गोया इनायत की है।''

(तारीखुल खुलफा पेज.187)

कुरआन फसाहत व बलाग़त का इमाम है कि दुनिया के सारे बड़े बड़े फसीह व बलीग़ कुरआन की फसाहत व बलाग़त के आगे हैरान नज़र आते हैं, मगर कुदरत ने हज़रते अली को इस कुरआने पाक का हक़ीक़ी इरफान अता किया था। जिसकी बदौलत आपने उलूम व फुनून में वह हैरत अंगेज़ करनामे अन्जाम दिये जो तारीख के सफहात पर हमेशा हमेश के लिए मरकूम रहेंगे।

आपके इल्मो फज़्ल, तक़्वा व तहारत और तफक्कोह फिद् दीन (दीन के फिक़्ही मसाईल को समझना) से कोई शख्स इन्कार नहीं कर सकता। दीनी अहकाम के इस्तिम्बात में आपको कमाल हासिल था और इस बात में भी कोई शक व शुब्हा की गुंजाइश नहीं कि मौलाऐ कायनात बहुत

ही साहिबे शुजाअत शख्सीयत के हामिल थे, जिसकी सैंकड़ों मिसाले देखने को मिलती हैं।

याद रखें कि मेरा मक़सद सिर्फ हज़रते अली की शान को कुरआन व अहादीस की रोशनी में पेश करना है न कि सवानहे अली को मुकम्मल तहरीर करना हाँ चन्द बातें ज़िमनन पेश की जायेंगी।

विलादते बा-सआदत

हज़रते अली की विलादत 13 रजबुज मुरज्जब बरोज़ जुमा एलाने नुबूव्वत से दस साल पहले खाना-ए-काबा में हुई। आपका नामे नामी ''अली'' लक़ब ''असदुल्लाह'' और ''मुर्तज़ा'' है। कुन्नीयत ''अबुल हसन'' और ''अबू तुराब'' है।

शजरा-ए-नसब

अली इब्ने अबी तालिब बिन अब्दुल मुत्तलिब (असल नाम शैबा) बिन हाशिम (असल नाम अम्र) बिन अब्दे मुनाफ (असल नाम मुग़ीरह) बिन कुसै (असल नाम ज़ैद) बिन किलाब बिन नज़र बिन किनाना बिन खुज़ैमा बिन अदनान।

(सीरते इब्ने हिशाम जि.1, पेज.31)

हज़रते अली की वालिदा मुहतरमा का नाम फातिमा बिन्ते असद बिन हाशिम बिन अब्दे मुनाफ है। बचपन में ही मुशर्रफ ब-इस्लाम हो गये थे। आपका निकाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की साहिबज़ादी लख्ते जिगर हज़रत फातिमा रदियल्लाहु तआला अन्हा से हुआ था।

हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ये इरशादे गिरामी ''कुरआन अली के साथ है और अली कुरआन के साथ हैं'' हज़रते

अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की शराफत व करामत और उलू ए मर्तबत पर ऐसा जामेअ़ और मानेअ़ और फसीह व बलीग़ जुमला है जिस पर पूरी कायनात रश्क करती है इसमें वाज़ेह इशारा है कि हज़रते अली मुर्तज़ा को कुरआन फहमी में जो कमाल हासिल हुआ वह दूसरों को न मिला, और ऐसा इस लिए कि जिस ज़माने में कुरआन नाज़िल हो रहा था आप उस वक़्त से पैग़म्बरे दो जहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सोहबते बाबरकत में हाज़िर थे और बचपन ही से आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरबियत व किफालत और ज़ेरे साया अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। जैसा कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हू से मरवी है।:

ان القرآن انزل على سبعة احرف مافيها حرف الا وله ظهر و بطن وان عليا عنده من الظاهر والباطن.

तर्जमा: बेशक कुरआने पाक सात क़िरअतों में नाज़िल हुआ और कोई हर्फ ऐसा नहीं है जिसका एक ज़ाहिर और एक बातिन न हो और हर हर्फ के ज़ाहिर व बातिन का इल्म हज़रते अली के पास है।

(हुलियतुल औलिया जि.1 पेज.68)

और इस बात की तस्दीक़ खुद आपके क़ौल से भी होती है, चुनांचे जाबजा (जगह जगह पर) आप ये फरमाया करते कि अगर मेरे ऊंट की रस्सी गुम हो जाये तो मैं उसे कुरआन में तलाश कर लूंगा। ये आपके कमाले इल्मी और कुरआन फेहमी का नतीजा है वरना रस्सी की गुमशुदगी का कुरआन से क्या तअल्लुक ?

शाने अली कुरआन की रोशनी में

यूं तो बेशुमार आयाते कुरआनिया के मिस्दाक़ हज़रते अली हैं जिनमें से कुछ आयात पर हज़रते अली के सिवा किसी को अमल का मौक़ा नसीब नहीं हुआ लेकिन मैं यहाँ अपने उनवान के पेशे नज़र 15 आयाते कुरआनिया पेश करता हूँ।

पहली आयते करीमा

''وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّشۡرِىۡ نَفۡسَهُ ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ اللّٰهِ ؕ
وَاللّٰهُ رَءُوۡفٌ'' بِالۡعِبَادِ (पारा-2, सूरह बक़रा आयत:207)

तर्जमा: और कोई आदमी अपनी जान बेचता है अल्लाह की मर्ज़ी चाहने में और अल्लाह बन्दो पर मेहरबान है। (कन्ज़ुल ईमान)

सअलबी बयान करते हैं कि मैंने बाज़ किताबों में देखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जब हिजरत का इरादा फरमाया तो अपना क़र्ज अदा करने और अपने पास रखी हुई लोगों की अमानतें वापस लौटाने के लिए आपने हज़रते अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु तआला अन्हु को मक्का में अपने पीछे छोड़ दिया था और जबकि मुशरिकीन आपका घर घेरे हुऐ थे, हज़रते अली को हुक्म दिया कि मेरी सब्ज़ चादर ओढ़कर मेरे बिस्तर पर सो जाओ, अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम्हारे साथ कोई ना खुशगवार वाक़िया पेश नहीं आयेगा। चुनांचे हज़रते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने ऐसा ही किया जैसा कि आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया था। फिर अल्लाह तआला ने हज़रते जिब्रईल व मीकाईल अलैहिमस्सलाम से फरमाया कि तुम दोनों अली इब्ने अबी तालिब की तरह क्यों नहीं हो जाते। मैंने अली इब्ने अबी तालिब और मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दरमियान मवाखात (उलफत व मुहब्बत) का रिश्ता क़ायम किया तो अली अपनी ज़िन्दगी की परवाह न करते हुऐ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बिस्तरे अतहर पर सो गये और अपनी ज़िन्दगी पर उनकी ज़िन्दगी को तरजीह दी, तुम दोनों ज़मीन पर जाओ और अली की उनके दुश्मनों से हिफाज़त करो।

अल्लाह तआला के हुक्म से दोनों हज़रात यानी हज़रते जिब्रईल व हज़रते मीकाईल अलैहिमस्सलाम ज़मीन पर उतरे, जिब्रईल हज़रते अली के सर और मीकाईल उनके पैरों के पास खड़े हो गये और जिब्रईल कहने लगे अली इब्ने अबी तालिब मुबारक हो, मुबारक हो, कौन तुम्हारी हमसरी (बराबरी) का दावा कर सकता है। अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फरिश्तों के सामने तुम पर फख्र कर रहा है फिर अल्लाह तआला ने अपने रसूले मुहतरम व मुकर्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर जब वह हिजरत करते हुऐ मदीने जा रहे थे ये आयते करीमा ''وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّشۡرِىۡ نَفۡسَهُ ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوۡفٌ'' بِالۡعِبَادِ '' हज़रते अली की शान में नाज़िल फरमाई।

दूसरी आयते करीमा

وَلَقَدۡ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعۡدَهٗۤ اِذۡ تَحُسُّوۡنَهُمۡ بِاِذۡنِهٖ ۚ (पारा-4, सूरह आलेइमरान आयत:152)

तर्जमा: और बेशक अल्लाह तआला तुम्हें सच कर दिखाया अपना वादा जब कि तुम उसके हुक्म से काफिरों से क़िताल(जंग) करते थे। (कन्ज़ुल ईमान)

सदी बयान फरमाते हैं कि जब जंगे उहुद के मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मुशरिकीन के सामने पहुंचे तो अपने तीर अन्दाज़ों को हुक्म फरमाया वह पहाड़ की चोटी पर मुशरिकीन के सामने खड़े हो जायें और आपने ताकीद की कि अपनी जगह से हरगिज़ न हटें। आपने उनका मुक़ाबला करने के लिए हज़रते अब्दुल्लाह बिन जुबैर को मुकर्रर फरमाया। उसके बाद तलहा बिन उस्मान जो मुशरिकीन का झण्डा लिये हुए था उसने खड़े होकर कहा ऐ मुहम्मद के साथियो! तुम्हारा ख्याल है

कि अल्लाह तआला जल्द ही तुम्हारी तलवारों से हमें जहन्नम में पहुंचा देगा तो कोई तुम में है जिसे अल्लाह मेरी तलवार से जन्नत में पहुँचा दे?

ये सुनकर हज़रते अली बिन अबी तालिब खड़े हुऐ और कहा क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है मैं उस वक़्त तक तुझ से जुदा न हूंगा जब तक अल्लाह तआला मेरी तलवार से तुझे जहन्नम में पहुंचा न दे। हज़रते अली ने उस पर तलवार की ऐसी ज़र्ब लगाई (तलवार मारी) कि उसका पैर कट गया और वह ज़मीन पर ढेर हो गया, उसकी शर्मगाह खुल गयी, उसने आवाज़ लगाई कि ऐ चचाज़ाद भाई! तुझे अल्लाह का वास्ता रहम कर, ये सुनकर हज़रते अली ने उसे छोड़ दिया, ये मन्ज़र देखकर जनाबे रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अल्लाहु अकबर का नारा बुलन्द किया और हज़रते अली के दोस्तों ने उनसे कहा कि इसको छोड़ क्यों दिया? हज़रते अली ने फरमाया कि उसकी शर्मगाह खुल गयी थी उसने मुझे अल्लाह का वास्ता देकर क़सम दी थी इस लिए मुझे उस पर मज़ीद वार करने से शर्म आई।

(जामेउल कुरआन अन तावीले आयातिल कुरआन)

अल्लाहु अकबर! क्या शान है मौलाऐ कायनात की कि दुश्मानों के नरग़े में भी आप शरीअते मुतहरा का पास व लिहाज़ करते हैं और आपकी ग़ैरते ईमानी को ये गवारा न हुआ कि मैदाने जंग में भी जिसकी शर्मगाह खुल जाये उस पर वार किया जाये इस से आपकी ग़ैरते फितरी और तबीयत की नज़ाफत (पाकीज़गी) का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

तीसरी आयते करीमा

اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا يَسْتَوٗنَ

(पारा-21, सूरह सजदा आयत:18)

तर्जमा:- तो क्या जो ईमान वाला है वह उस जैसा हो जायेगा जो बे हुक्म है ये बराबर नहीं। (कन्जुल ईमान)

अत्तार बिन यसार बयान करते हैं कि ये आयत मदीना में हज़रते अली इब्ने अबी तालिब और वलीद बिन उक़बा बिन मुईत के बारे में नाज़िल हुई है वलीद और हज़रत अली के दरमियान कुछ कहा सुनी हो गयी थी। वलीद ने कहा मैं तुम से ज़्यादा ज़बान का तेज़, ज़्यादा महारत रखता हूँ, हज़रते अली ने उसके जवाब में कहा कि अपनी ज़बान बन्द रखो तुम फासिक़ हो। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयते मज़कूरा नाज़िल फरमाई।

मज़कूरा आयत से पता चलता है कि हज़रते अली का क्या मुक़ाम है कि अल्लाह तआला ने अपने प्यारे बन्दे से वह अलफाज़ नहीं कहलवाना चाहता है कि जिस से किसी को तकलीफ हो फौरन इस बात की तन्बीह दी कि ऐ अली! तुम्हारी ज़बान से ये अलफाज़ निकले ये तेरे शायाने शान नहीं है।

चौथी आयते करीमा

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّ تَعِيَهَاۤ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ (पारा-29, सूरह अलहाक्का आयत:12)

तर्जमा:- कि उसे तुम्हारे लिए यादगार करें और उसे महफूज़ रखे वह कान कि सुनकर महफूज़ रखता हो। (कन्जुल ईमान)

मकहूल बयान करते हैं कि जनाबे रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने '' وَّ تَعِيَهَاۤ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ '' की तिलावत फरमाई फिर हज़रते अली की जानिब मुतवज्जा होकर फरमाया मैंने अल्लाह से दुआ की है कि आयत में जिस कान का ज़ि है उसे तुम्हारा कान बना दे। हज़रते अली इब्ने अबी तालिब फरमाते हैं कि इसके बाद सूरते हाल ये हो गयी थी कि मैं अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कोई हदीस सुन के भूलता नहीं था।

हज़रत बुरीदा का बयान ये है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम को हज़रते अली से ये इरशाद फरमाते हुऐ सुना कि अली! अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि तुम्हे क़रीब करूं और कोई कोताही न करूं, तुम्हें तालीम दूं और तुम उसे महफूज़ कर लो, अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे में ले लिया है कि तुम्हारे दिल में इसे महफूज़ कर दे, इस मौक़े पर मज़कूरा आयत नाज़िल हुई।

(जामिउल कुरआन अन तावीलि आयातिल कुरआन)

आयते करीमा के शाने नुजूल से ये बात वाज़ेह होती है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्ल्म को अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि आप हज़रते अली को अपना क़ुर्बे खास अता फरमाकर उनकी हिफाज़त व सियानत की रियायत करें। इसके अलावा आयत में ल ज़े उज़न (कान) का मिस्दाक़ हज़रते अली को क़रार देने में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्ल्म की दिली ख्वाहिश थी। जिसकी बदौलत हज़रते अली की कुव्वते हाफिज़ा में मज़बूती आयी।

पाँचवी आयते करीमा

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ (पारा-6, सूरह मायदा आयत:55)

तर्जमा:- तुम्हारे दोस्त नहीं मगर अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले कि नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के हुजूर झुके हुऐ। (कन्जुल ईमान)

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास, सदी, उतबा बिन हकीम और गालिब बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि अल्लाह का इरशाद '' اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ '' से हज़रते अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु तआला अन्हु मुराद हैं। हज़रते अली मस्जिद में हालते रूकुअ़ में हैं कि उसी वक़्त एक साइल

गुज़रा आपने उसे अपनी अंगूठी उतार कर दे दी।

(तफसीरे नईमी जि.6 पेज.437)

एक सवाल और उसका जवाब

अब रहा ये सवाल कि हालते रुकुअ में हज़रते अली ने कैसे अंगूठी निकाली? क्या उनकी नमाज़ बातिल हो गयी थी या नहीं? अगर हो गयी थी तो हज़रते अली ने नमाज़ क्यों बातिल की साइल को बादे नमाज़ भी दे सकते थे। इसका जवाब ये है कि वह अंगूठी हज़रते अली की उंगली में ढीली थी जिसको निकालने में ज़्यादा दिक़्क़त नहीं होती थी तो ये अमले क़लील हुआ अैर अमले क़लील से नमाज़ बातिल नहीं होती है।

(हवाला तफसीरे ख़ज़ाइनुल इरफान)

और इस आयत के अन्दर जो सिफत बयान की गयी वह सिफत हज़रत अली के अन्दर है इसकी तौसीक़ में एक और रिवायत उबाबा इब्ने रबीई का बयान है कि एक दिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास ज़मज़म के किनारे बैठे थे कि इसी दौरान एक साहब अमामा बांधे वहाँ तशरीफ लाए, हज़रते इब्ने अब्बास ने कहा कि मैं आपको अल्लाह का वास्ता देता हूँ आप बताऐं कि आप कौन हैं? तो उस शख्स ने अमामा को अपने चहरे से हटाया और कहा ऐ लोगो! में जुन्दब बिन जुनादा यानी अबुज़र गि़फारी हूँ, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना है (अगर मैं झूठ बोलूं तो मेरे कान बहरे और आँखें अन्धी हो जायें) कि अली सालेहीन के क़ाइद हैं अैर काफिरों को क़त्ल करने वाले हैं जो उनकी मदद करेगा उसकी मदद की जायेगी और जो उनको छोड़ देगा उसे छोड़ दिया जायेगा।

छठी आयते करीमा

(पारा–13, सूरह रअद आयत:29) طُوۡبٰی لَهُمۡ وَحُسۡنُ مَاٰبٍ

तर्जमा: उनको खुशी है और अच्छा अन्जाम।(कन्जुल ईमान)

अबू जाफर कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से अल्लाह के इरशाद यानी मज़कूरा आयत '' طُوۡبٰی لَهُمۡ وَحُسۡنُ مَاٰبٍ '' का मतलब दरया त फरमाया तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तूबा एक दरख्त का नाम है जिसकी जड़ें मेरे घर में हैं और उसकी शाखें अहले जन्नत पर है। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से जब दूसरी बार इसकी तफसीर मालूम की गयी तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तूबा जन्नत में एक दरख्त का नाम है जिसकी जड़ें अली के घर में हैं और शाखें अहले जन्नत पर हैं।

हमने दरया त किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आपने पहले कुछ और फरमाया था और अब कुछ और? तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि कल क़यामत के दिन मेरा और हज़रते अली का घर एक ही जगह होगा।

(अल–कश्फ वल बयान फि तफसीरिल कुरआन)

आयत की तफसीर में मुफस्सिरीने किराम ने ल ज़े तूबा का मिस्दाक़ हज़रते अली को क़रार दिया है मज़ीद ये है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बरोज़े क़यामत अपना और हज़रते अली का ठिकाना एक ही जगह क़रार दिया है। ये आपकी शाने इम्तियाज़ी है।

सातवीं आयते करीमा

(पारा–13, सूरह रअद आयत:43) وَمَنۡ عِنۡدَهٗ عِلۡمُ الۡكِتٰبِ

तर्जमा:– और वह जिसे किताब का इल्म है। (कन्जुल ईमान)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अत्तार रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैं अबू जाफर रदियल्लाहु अन्हु के साथ मस्जिद में बैठा था कि मैंने देखा हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु मस्जिद के एक गोशे में बैठे हुऐ हैं मैंने हज़रत अबू जाफर से अर्ज़ किया कि लोगों का ख्याल है कि वह शख्स जिसके पास किताब का इल्म है वह हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने सलाम हैं? हज़रत अबू जाफर ने फरमाया नहीं वह तो हज़रते अली इब्ने अबी तालिब हैं।

इब्नुल खलीफा फरमाते हैं कि वह शख्स जिसके पास आसमानी किताब का इल्म है वह हज़रते अली इब्ने अबी तालिब है।

मज़कूरा आयते करीमा से हज़रते अली के इल्म के बारे में मालूम होता है कि हज़रते अली इल्म के समुन्दर थे।

आठवीं आयते करीमा

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوۡلٰىهُ وَجِبۡرِيۡلُ وَصَالِحُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۚ
(पारा–28, सूरह तहरीम आयत:4) وَالۡمَلٰٓئِكَةُ بَعۡدَ ذٰلِكَ ظَهِيۡرٌ''

तर्जमा:– बेशक अल्लाह उनका मददगार है और जिब्रईल और नेक ईमान वाले और उसके बाद फरिश्ते मदद पर हैं। (कन्जुल ईमान)

मज़कूरा आयत के बारे में मुफस्सिरीन का क़ौल है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि इस में '' صَالِحُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۚ '' से मुराद अली इब्ने अबी तालिब हैं।

इस से हज़रते अली का सालेह और शरीफ होना पता चलता है कि

हज़रते अली मुत्तक़ी और परहेज़गार और सुलह पसन्द थे,

नवीं आयते करीमा

سَالَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۝ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ (पारा-29, मआरिज आयत:1,2)

तर्जमा:- एक मांगने वाला वह अज़ाब मांगता है जो काफिरों पर होने वाला है उसका कोई टालने वाला नहीं। (कन्जुल ईमान)

सुफिया बिन ऐनिया से कुरआन की आयत ''سَالَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۝ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ'' की तफसीर मालूम की गयी और पूछा गया कि किस बारे में नाज़िल हुई है तो उन्होंने फरमाया कि तुमने ऐसा सवाल किया जो तुम से पहले किसी ने मुझ से नहीं किया है। मेरे वालिद ने मुझ से जाफर बिन मुहम्मद के वास्ते बयान किया और वह अपने अजदाद (दादा वगैरह) में से किसी से बयान करते हैं।

जब रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ग़दीरे खम पर थे तो लोगों को बुलाया, तमाम लोगों के जमा होने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ा और फरमाया ''मैं जिसका मौला हूँ अली भी उसके मौला हैं।'' ये बात आम हुई और तमाम इलाक़ों तक पहुंची, ये खबर जब हारिस बिन नौमान फहरी को मिली तो वह अपनी ऊंटनी पर सवार होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास आया, मुक़ामे अबतह में पहुंचकर अपनी ऊंटनी से उतरा और उसे बिठाकर बाँध दिया, फिर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास आया, आप उस वक्त अपने अस्हाब (सहाबियों) के साथ तशरीफ फरमा थे, उसने कहा ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) आपने अल्लाह तआला

की तरफ से हम से बयान किया है कि हम इस बात की गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और आप अल्लाह के रसूल हैं, आपकी ये बात हमने तसलीम (क़बूल) की, फिर आप ने हमें पंज वक़्ता नमाज़ का हुक्म दिया, हमने इसे भी क़बूल किया, आपने ज़कात का हुक्म दिया, हमने इसे भी अपनाया, हज के तअल्लुक़ से गु तगू की हमने इसको भी बसरो चश्म क़बूल कर लिया, रोज़े के अहकाम को भी दिल से लगाया, इस पर आपने बस नहीं किया और अपने चचा के लड़के को बुलन्द करके इसे हमारे ऊपर फज़ीलत दी और ये कह दिया कि मैं जिसका मौला हूँ अली भी उसके मौला हैं, कहा ये बात मन घड़त है या अल्लाह का हुक्म है?

आपने फरमाया अल्लाह का हुक्म है।

ये सुनकर हारिस बिन नौमान अपनी सवारी की तरफ ये कहता हुआ पलटा कि ऐ अल्लाह! अगर ये बात सही है तो आसमान से हम पर पत्थर बरसा दे या दर्दनाक अज़ाब भेज दे, हारिस अभी अपने घर नहीं पहुंचा था कि अल्लाह ने उस पर पत्थर बरसा दिया जो उसके सर पर लगा और सुरीन के रास्ते से बाहर निकल गया जिसकी वजह से उसकी मौत हो गयी, इस पर आयते मज़कूरा नाज़िल हुई।

इस आयते करीमा से मौलाऐ कायनात हज़रते अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की बारगाहे इलाही में कुर्बत व महबूबियत का बखूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। और साथ ही ये राज़ भी हर एक पर ज़ाहिर हो गया, जो मुन्किरे विलायते अली होता है वह नमाज़ी, हाजी , ग़ाज़ी और साइमुद् दहर(हमेशा रोज़ा रखने वाला) क़ायमुल्लैल(रात को इबादत करने वाला) होने के बावजूद भी बारगाहे खुदा वन्दी में मुजरिम ठहरता है

और सज़ाऐ इलाही का हक़दार होता है।

दसवीं आयते करीमा

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ج وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ (पारा–26, सूरह फतह आयत:20)

तर्जमा:– और अल्लाह ने तुम से वादा किया है बहुत सी गनीमतों का कि तुम लोगे तो तुम्हें ये जल्द अता फरमा दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिये और इस लिए ईमान वालों के लिए निशानी हो।(कन्जुल ईमान)

हज़रत मुहम्मद बिन जाफर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हम रसूले कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ खैबर की तरफ निकले, ये सफर रात का था, सलमा बिन अकवा हमारे साथ थे एक शख्स ने आमिर से कहा अपने रिजज़िया अशआर (जंग में पढ़े जाने वाले अशआर) नहीं सुनाओगे आमिर शाइर थे चुनांचे उन्होंने रिजज़िया अशआर पढ़ना शुरू किया, हमने खैबर का मुहासरा कर लिया, इस दौरान हमें सख्त भूक लग रही थी फिर अल्लाह ने फतह नसीब फरमाई, रसुले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस दिन जिहाद का अलम हज़रते उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ में दिया, उनके साथ कुछ लोग भी निकले, ख़ैबर वालों से मुठभेड़ हुई लेकिन हज़रते उमर और उनके साथियों को शिकस्त का सामना करना पड़ा, और वह आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास वापस आ गये, हज़रत उमर अपने साथियों को बुज़दिली का ताना देते रहे, बारिश की वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम लोगों के दरमियान तशरीफ न ला सके, हज़रत उमर के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम का अलम अबू बकर ने अपने हाथों में लिया और बहादुरी के साथ जंग की जो पहले से बहुत सख्त थी लेकिन फिर वापस आ गये।

जब इस सूरते हाल की इत्तेला नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को दी तो आपने फरमाया :

''मैं जिहाद का अलम कल ऐसे शख्स को दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह और उसके रसूल उससे मुहब्बत करते हैं।''

उस वक़्त हज़रते अली वहाँ पर मौजूद नहीं थे।

दूसरे दिन हज़रते अबू बकर और हज़रते उमर और क़ुरैश के दीगर लोगों को उम्मीद थी कि शायद जिहाद का अलम उनके हाथ में दिया जायेगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते सलमा बिन अकवा को हज़रते अली के पास उनको बुलाने के लिए भेजा वह उनको ऊंट पर बिठा लाये, उस वक्त हज़रते अली की आँखों में शदीद (सख्त) तकलीफ थी। सलमा बिन अकवा कहते हैं कि मैंने हज़रते अली को सहारा दिया आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पूछा क्या हुआ है? हज़रते अली ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! आँखें आई हुई हैं। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया क़रीब आओ और अपना लुआबे दहन (थूक) उनकी आँखों में लगा दिया, आँख की तकलीफ जाती रही।

आपने जिहाद का अलम उनके हाथ में दिया, हज़रते अली ने अलम लहराया और खैबर पहुंचे, मरहब जो क़िले का सरदार था उस वक्त वह निकला और यह अशआर पढ़ रहा था।

قد علمت خیبر انی مرحب
شاکی السلاح بطل مجرب

اطــعــن احيــانــا حيــنــا اضــرب

اذا الـــحـــروب اقبــلـــت تــلـتهـــب

كــان حـــمــاى كـا لـحـمى لايـقـرب

तर्जमाः खैबर को मालूम है कि मैं मरहब हूँ, मैं हथियार रखने वाला और तजर्बाकार बहादुर हूँ, जब जंग के शोले भड़कते हैं तो कभी वार नेज़े से करता हूँ और कभी तलवार से, मेरा क़िला उस चरागाह की तरह है जहाँ परिन्दा भी पर नहीं मार सकता।

हज़रते अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम उसके मुक़ाबले में मुन्दरिजा ज़ैल अशआर पढ़ते हुऐ आगे बढ़े।

انــا الــذى ســمـتـنـــى امـــى حيـدرة

كــليـــث الــغـابـات كـوية الـمـنـظـرة

اوفيهــم بـــالــصـــاع كيـل الســنـدرة

तर्जमाः- मैं ही वह इन्सान हूँ जिसकी माँ ने उसका नाम हैदर रखा है, वह घने जंगल में रहने वाला शैर की तरह है और मैदाने जंग में बहुत ज्यादा कुश्त व खून करता है। दोनों की तलवारें टकराई, हज़रते अली ने आगे बढ़कर तलवार इस तरह से मारी कि तलवार सर को फाड़ती हुई दाढ़ तक पहुंच गयी, इस तरह खैबर को उन्होंने हासिल कर लिया और फतह उनके हाथ पर हुई।

इस आयत की तफसीर में रईसुल मुफस्सिरीन हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहु अन्हु ने जो तफसीर में नक़ल फरमाई है उसकी मुनासिबत से शाने की अली की अज़्मत व रिफअत का ज़ुहूर होता है जिसमें अंबियाऐ साबिक़ीन (पहले के नबी) की बेअसत का मक़सद नबी

की नुबूव्वत और हज़रते अली की विलायत को आम करना है। और ये आपकी एजाज़ी शान है।

एक सवाल और उसका जवाब

मुन्दरिजा बाला क़ौल "जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है......" इस से कोई शख़्स ये अन्दाजा न लगाये कि हज़रते अली के अलावा जितने अहसाब थे उनके दिल में अल्लाह की मुहब्बत न थी और अल्लाह व रसूल उनसे राज़ी न थे, नहीं बल्कि इस जगह ऐसा क़ौल सिर्फ हौसला अफज़ाई के लिए कहा गया है वरना सारे असहाब यक़ीनन हक़ पर हैं। जैसा कि कुरआन मजीद में है।

رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُوۡا عَنۡهُ (पारा-30, सूरह बै यना रुकूअ23)

तर्जमाः- अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी। (कन्जुल ईमान)

ग्यारहवीं आयते करीमा

وَسۡـئَلۡ مَـنۡ اَرۡسَـلۡـنَا مِنۡ قَبۡلِکَ مِنۡ رُّسُلِنَآ اَجَعَلۡنَا مِنۡ دُوۡنِ الرَّحۡمٰنِ اٰلِهَةً يُّعۡبَدُوۡنَ (पारा-25, सूरह जुखरुफ आयत:45)

तर्जमाः- और उनसे पूछो जो हमने तुम से पहले रसूल भेजे क्या हमने रहमान के सिवा कुछ खुदा ठहराये जिनको पूजा हो। (कन्जुल ईमान)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु अन्हु बयान फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरे पास एक फरिश्ता आया और उसने कहा ऐ मुहम्मद! सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम क्या आपको मालूम है कि आपसे पहले जो अंबिया भेजे गये थे उनको किस लिए भेजा गया था मैंने पूछा किस लिए? उस फरिश्ते ने जवाब दिया कि आपकी नुबूवत व रिसालत और हज़रते अली की विलायत का

एलान करने के लिए।

(तारीखे दिमश्क़ इब्ने असाकिर जि.2 पेज.917)

मतलब व मफहूम ये हुआ कि सारे अंबिया खुदा की वहदानियत को बतलाने और उसके अहकाम को बतलाने के लिए तशरीफ लाये और उन्हीं अहकाम में शाने रिसालत को बतलाना भी था और साथ ही हज़रते अली की विलायत को भी ज़ाहिर करना था।

बारहवीं आयते करीमा

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۙ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ (पारा-27, सूरह रहमान आयत:19,20)

तर्जमा:- उसने दो समुन्द्र बहाये कि देखने में मालूम हों मिले हुऐ। (कन्जूल ईमान)

मज़कूरा आयत के मुतअल्लिक़ चन्द अक़वाल हैं जिसमें कुरआन की इस आयत से मुराद हज़रते सुफियान सौरी ने शेरे खुदा हज़रते अली को लिया है। सुफियान सौरी बयान करते हैं कि कुरआन की आयत ''مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۙ'' से मुराद हज़रते अली और हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हुमा हैं और अल्लाह तआला का इरशाद يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ से हसन व हुसैन मुराद हैं और कुरआन की आयत بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ से आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मुराद हैं। (अल-कश्फु वल बयान फि तफसीरिल कुरआन)

तेरहवीं आयते करीमा

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ (पारा-12, सूरह हूद आयत:17)

तर्जमा:-तो क्या वह जो अपने रब की तरफ से रोशन दलील पर हो और उस पर अल्लाह की तरफ से गवाह आये। (कन्जुल ईमान)

बयान किया जाता है कि इस आयते मज़कूरा में शाहिद से मुराद हज़रते अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु हैं। आप फरमाते हैं कि कुरैश के हर आदमी के बारे में कुरआन की कोई न कोई आयत नाज़िल हुई, एक आदमी ने सवाल किया आपके बारे में कौन सी आयत नाज़िल हुई है? फरमाया ये आयत ''اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ'' नाज़िल हुई है।

चौदहवीं आयते करीमा

وَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا (पारा-29, सूरह दहर आयत:8,9)

तर्जमा:- और खाना खिलाते हैं उसकी मुहब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को (बाज़ कैदी को) उन से कहते हैं कि हम तुम्हें खास अल्लाह के लिए खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शु गुज़ारी नहीं मांगते।(कन्जुल ईमान)

हज़रते अब्दुल्ला बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि ये आयत अली इब्ने अबी तालिब के बारे में नाज़िल हुई है। वाकिया ये है कि हज़रते अली ने एक यहूदी के यहाँ कुछ जौ के बदले काम किया, काम के बाद उनको जो जौ मिले, उसका एक तिहाई हिस्सा पीसकर आटा बनाया गया फिर उससे खाने के लिए कोई चीज़ बनाई जब खाना तैयार हो गया तो एक मिस्कीन आया, उसने सवाल कर दिया, आपने वह खाना उसके हवाले कर दिया, उसके बाद जौ का दूसरा तिहाई आटा का खाना बनाया जब खाना तैयार हो गया तो एक यतीम आ गया और उसने सवाल कर दिया, आपने खाना उसके सुपुर्द कर दिया, फिर बाकी हिस्सा का खाना तैयार हुआ तो एक क़ैदी आ गया उसने भी सवाल कर दिया, तैयार शुदा खाना उसको दे दिया गया, घर वालों ने उस दिन फाक़े में गुज़ारे।

अल्लाहु अकबर क्या शान है हज़रते अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की खुद तो पेट पर पत्थर बाँध लिया मगर यतीमों, मिस्कीनों और साइलों को महरूम न किया।

साहिबे खज़ाइनुल इरफान इसका शाने नुजूल इस तरह मरकूम (तहरीर) फरमाते हैं कि ये आयत हज़रते अली और हज़रते फातिमा और उनकी कनीज़ फिज़्ज़ा रदियल्लाहु अन्हुम के हक़ में नाज़िल हुई हसनैन करीमैन रदियल्लाहु अन्हुमा बीमार हो गये, उन हज़रात ने उनकी सेहत पर तीन रोज़ों की नज़र (मन्नत) मानी, अल्लाह तआला ने सेहत अता फरमाई, नज़र पूरी करने का वक़्त आया तो सभी ने रोज़े रखे जब इ तार का वक्त आया और रोटियाँ सामने रखी गयीं तो उसी वक्त एक मिस्कीन एक दिन, दूसरे दिन यतीम और तीसरे दिन एक असीर (क़ैदी) आया तीनों दिन ये रोटियाँ उनको दे दी गयीं और सिर्फ पानी से इ तार किया गया।

मज़कूरा आयत की तफसीर और उसके सबबे नुजूल से भी इस बात का इन्केशाफ (ज़ाहिर) होता है कि आप दरिया दिली, जव्वादी, सखावत और ग़मगुसारी में भी यकताऐ रोज़गार हैं। कि आपने अपनी कमाई के मामूली जौ को भी यतीमों, मिस्कीनों और क़ैदियों पर कुर्बान कर दिया और खुद फाक़े पर गुज़ारा किया। दूसरी तफसीर की वज़ाहत से भी इस आयत का मिस्दाक़ हज़रते अली ही को क़रार दिया गया। जिसमें आप और आपके अहले खाना (घर वाले) ने मुसलसल तीन रोज़े फक़त पानी से इ तार किये और जो चीज़ें हाज़िर थीं उसे साइलों के हवाले कर दिया। ये आपकी जव्वादी और दरिया दिली का एक नमूना था।

पन्द्रहवीं आयते करीमा

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَىْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ط (पारा-28, सूरह मुजादिला आयत:12)

तर्जमा:-ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूल से कोई बात आहिस्ता अर्ज करना चाहो तो अपनी अर्ज से पहले कुछ सदक़ा दे दो। (कन्जुल ईमान)

सैयदे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में जब अमीरों ने अर्ज़ व मारूज़ (सवाल व जवाब) का सिलसिला दराज़ (लम्बा) कर दिया और नौबत यहाँ तक पहुंच गयी कि फुक़रा को अपनी अर्ज़ पेश करने का मौक़ा कम मिलने लगा तो हुक्म हुआ कि अर्ज़ करने से पहले सदक़ा दो, और इस हुक्म पर हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु ने एक दीनार सदक़ा करके दस मसअला दरया त किया। जैसा कि हज़रते अली मुर्तज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु खुद फरमाया करते थे कि कुरआन में एक ऐसी आयत है **ما عمل بها احد قبلی ولایعمل بها احد بعدی** यानी मुझ से पहले किसी ने अमल नहीं किया और न ही मेरे बाद कोई इस पर अमल करेगा।

(तफसीरे खाज़िन जि.4 पेज.264)

इसके इस आयत का हुक्म मन्सूख हो गया। और रुखसत नाज़िल हुई। और सिवाऐ हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु के और किसी को इस पर अमल करने का मौक़ा नहीं मिला।

(तफसीरे खज़ाइनुल इरफान)

ज़ि कर्दा मज़कूरा बाला आयात की तफसीर हज़रते अली मुर्तज़ा शेरे खुदा हैदरे कर्रार कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की उलू मर्तबत और बुलन्दी दर्जात की आईना दार है। रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ''अल-कुरआन मअ़ अली'' के फरमाने आलीशान के ज़रिये हज़रते अली को कुरआन फेहमी , खुदा शनासी, मुहरिमे असरारे इलाही, उलूमे शरीअत व तरीक़त और रूमूज़े हक़ीक़त व मार्फत का समुन्द्र बना दिया, यही वजह है कि आप के उलूम व इरफान की वुसअत इस क़द्र बढ़ी कि मशहूर ताबई हज़रत सईद बिन मुसै यब कहते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के असहाब में सिर्फ हज़रते अली को ये हक़

हासिल था कि वह कहें ''سلونی عما شئتم''(जो चाहो मुझ से पूछ लो।)

कुरआन जिस तरह अली का हमसफर रहा इसी तरह अली भी कुरआन के हमरिकाब रहे कि अली की खलवत व जलवत, अली की रज़्म व बज़्म, अली की सुबह व शाम, अली की खामोशी व गोयाई,अली की इबादत व बन्दगी, अली की इताअत व फरमाबरदारी, अली की शुजाअत व बहादुरी, अली का सब्र व क़नाअत, अली का ईसार व तवक्कुल और अली की नशिस्त व बरखास्त सब की सब कुरआनी आयत की तर्जुमान हुआ करती थी।

शाने अली अहादीस की रोशनी में

मैंने अपने उनवान के तहत कुरआने पाक की तक़रीबन पन्द्रह आयतें पेश कीं जिससे ये साबित होता है कि इन आयाते करीमा के मिस्दाक़ या तो तने तन्हा हज़रते अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम हैं या मिस्दाक़ में दीगर सहाबा के साथ हज़रते अली भी शरीक हैं। आयते कुरआनिया की तरह बेशुमार अहादीसे करीमा भी शाने अली में मौजूद हैं बल्कि जितनी अहादीस हज़रते अली की फज़ीलत में आई हैं, दूसरे किसी सहाबाऐ किराम के लिए नहीं हैं जैसा कि हज़रते इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं :

''لم ينقل لاحد من الصحابه ما نقل لعلى.'' (अल-इसाबतु फी तमीज़िस्सहाबा पेज.939)

जितनी हदीसें हज़रते अली के लिए मन्कूल हैं उतनी किसी और सहाबी के लिए नहीं।

रसूले बावक़ार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का एक फरमाने आलीशान ने तो हज़रते अली की रिफअ़ते मन्ज़िलत व फज़ीलत को दो बाला कर दिया। जो हज्जतुल विदा के मौक़ा के आखिरी तारीखी खुतबा में जुमला असहाबे किराम की मौजूदगी में फरमाया था। من كنت مولاه

فعلى مولاه मैं जिसका आक़ा हूँ तो अली भी उसके आक़ा हैं। अब मैं अपने मौज़ूअ पर तर्तीब वार उन अहादीसे करीमा को पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ जो शाने अली में फख्रे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मरवी हैं।

हदीस नं.1

من احب عليا فقد احبنى ومن احبنى فقد احب الله ومن ابغض عليا فقد ابغضنى ومن ابغضنى فقد ابغض الله. (कन्जुल उम्माल जि.11,पेज.232)

तर्जमा::- जिस किसी ने अली से मुहब्बत की उसने मुझ से मुहब्बत की और जिसने मुझ से मुहब्बत की उसने खुदा से मुहब्बत की, और जिसने अली से बुग़्ज़ रखा उसने मुझ से बुग़्ज़ रखा, और जिसने मुझ से बुग़्ज़ रखा उसने खुदा से बुग़्ज़ रखा।

हदीस नं.2

الناس من شجرشتى وانا و على من شجره واحدة.(सवाइकुल महरिक़ा पेज.420)

तर्जमा:- सारी इन्सानियत मुख्तलिफ दरख्तों से पैदा की गयीं लेकिन मैं और अली एक दरख्त से हैं।

हदीस नं.3

عن عمران بن حصين قال قال رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم ماتريدون من على ، ماتريدون من على ماتريدون من على ان عليا منى وانا منه وهو ولى كل مومن من بعدى. (तिर्मिज़ी बाबुल मनाकिब पेज.78)

तर्जमा:- इमरान बिन हसीन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम लोग अली के

मुतअल्लिक क्या सोचते हो, तुम लोग अली के मुतअल्लिक़ क्या सोचते हो, तुम लोग अली के मुतअल्लिक़ क्या सोचते हो? फिर फरमाया बेशक अली मुझ से और मैं अली से हूँ और मेरे बाद वह हर मोमिन के वली हैं।

हदीस नं.4

عن سعد بن ابی وقاص قال سمعت رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم یقول من کنت مولاه فعلی مولاه وسمعته یقول انت منی بمنزلة هارون من موسیٰ الا انه لانبی بعدی ، وسمعته یقول لا عطین الرایة الیوم رجلا ، یحب الله ورسوله . (सही बुखारी जि.1)

तर्जमा:-हज़रते सअ़द बिन अबी वक्कास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ये फरमाते हुऐ सुना जिसका मैं मौला हूँ उसके अली भी मौला हैं और ये भी फरमाते सुना कि तुम मेरी जगह इसी तरह हो जैसे हारून मूसा की जगह पर थे, मगर मेरे बाद कोई नबी नहीं आयेगा। और ये भी फरमाते सुना मैं आज उस शख्स को अलम दूंगा जो अल्लाह व रसूल से मुहब्बत करता है।

मज़कूरा हदीस में सरकार का ये फरमान '' तुम मेरे बाद उसी तरह हो जैसे हारून मूसा की जगह पर थे मगर मेरे बाद कोई नबी नहीं आयेगा।'' इसमें सराहत इस बात की तरफ है कि ऐ लोगो! मेरे बाद अली के दामन से वाबस्ता रहना मज़ीद ये कि हज़रते अली को अपना नायब क़रार दिया जैसा कि हज़रते हारून हज़रते मूसा के कायम मुक़ाम थे नीज़ हज़रते अली के हाथों में अलम देकर उनकी अज़मत व शान को दो बाला कर दिया। ताकि लोगों के दिलों में उनकी शराफत व बुजुर्गी बैठ जाये।

नोट: ये फरमाने नबी जंगे खैबर के मौक़े पर सादिर हुआ था। (नाज़)

हदीस नं.5

عن ابی ذر قال قال رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم من اطاعنی فقد اطاع الله ومن عصانی فقد عصی الله ومن اطاع علیا فقد اطاعنی ومن عصی علیا فقد عصانی. (अल-मुस्तदरक लिलहाकिम जि.3 पेज.121)

तर्जमा: हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने मेरी ना-फरमानी की उसने अल्लाह की नाफरमानी की और जिसने अली की इताअत की उसने मेरी इताअत की और जिसने अली की नाफरमानी की उसने मेरी नाफरमानी की।

मज़कूरा हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रते अली की इताअत व फरमाबरदारी को अपनी इताअत व फरमाबरदारी क़रार दिया और उनकी नाफरमानी को अपनी नाफरमानी बताई जिससे आपके फज़लो कमाल और क़द्रो मंज़िलत का ज़हूर होता है।

हदीस नं.6

عن براء بن عاذب قال اقبلنا مع رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم فی حجة التی حج فنزل فی بعض الطریق فامر الصلوٰة جامعة فاخذ بید علی فقال الیس النبی اولیٰ بالمومنین من انفسهم قالوا بلیٰ قال الست اولیٰ بکل من مؤمن من نفسه قالوا بلیٰ، قال فهذا مولیٰ من انا مولاه اللهم وال من والاه اللهم عاد من عاداه. (इब्ने माजा जि.10 पेज.88)

तर्जमा:- बर्रा बिन आज़िब रिवायत करते हैं कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ हज किया, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने रास्ते में एक जगह क़याम फरमाया और नमाज़े

बा-जमाअत क़ायम करने का हुक्म दिया, उसके बाद हज़रते अली का हाथ पकड़ कर फरमाया क्या मैं मोमिनों की जानों से क़रीब तर नहीं हूँ? उन्होंने जवाब दिया क्यों नहीं। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं हर मोमिन की जान से क़रीब तर नहीं हूँ? उन्होंने जवाब दिया क्यों नहीं। फिर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया ये (अली) उसके मौला हैं जिसका मैं मौला हूँ, ऐ अल्लाह तू उसे दोस्त रख जो उसे दोस्त रखे, और तू उससे अदावत (दुश्मनी) रख। जो उस से अदावत रखे।

हदीस नं.7

عن براء بن عاذب قال كنا مع رسول اللّٰه صلى الله تعالىٰ عليه وسلم فى سفر فنزلنا بغدير خم فنودى فينا الصلوٰة جامعةو كسح رسول الله تحت شجر تين فصلى الظهر واخذ بيد على فقال الستم تعلمون انى اولىٰ بكل مومن من انفسهم قالوا بلى قال الستم تعلمون انى اولىٰ بكل مؤمن من نفسه قالوا بلى قال فاخذ بيد على فقال من كنت مولاه فعلى مولاه اللّٰهم وال من والاه وعاد من عاداه فلقيه عمر رضى الله عنه بعد ذالك فقال هنيا ابن ابى طالب اصبحت و امسيت مولى كل مومن و مومنة. (मुसनद अहमद बिन हम्बल जि.3 पेज281)

तर्जमा:- हज़रते बर्रा बिन आज़िब से रिवायत है कि हम रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ सफर पर थे, रास्ते में हमने ग़दीरे खम पर क़याम फरमाया वहाँ निदा (आवाज़) दी गयी कि नमाज़ खड़ी हो गयी है। और रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए दो दरख्तों के नीचे सफाई की गयी, फिर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नमाज़े ज़ुहर अदा की और हज़रते अली का हाथ

पकड़कर फरमाया क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मैं मोमिनों की जानों से भी ज़्यादा क़रीब हूँ? उन्होंने कहा क्यों नहीं? आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मैं हर मोमिन की जान से ज़्यादा क़रीब हूँ? उन्होंने कहा क्यों नहीं।

रावी कहते हैं कि फिर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते अली का हाथ पकड़ कर फरमाया जिसका मैं मौला हूँ उसके अली मौला है, ऐ अल्लाह! तू उसे दोस्त रख जो इसे (अली को) दोस्त रखे, तू उससे अदावत रख जो इस से अदावत रखे, रावी कहते हैं कि इसके बाद हज़रते उमर ने हज़रते अली से मुलाक़ात की और उनसे कहा ऐ इब्ने अबी तालिब! मुबारक हो आप सुबह व शाम यानी हमेशा के लिए हर मोमिन व मोमिना के लिए मौला बन गये।

हदीस नं. 8

عن ابن بريده عن ابيه قال قال رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم من كنت وليه فعلى وليه. (मुसनद अहमद बिन हम्बल जि.5 पेज361)

तर्जमा:- हज़रते इब्ने बुरीदा अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिसका मैं वली हूँ तो अली भी उसके वली हैं।

हदीस नं.9

عن زيد بن ارقم قال لما رجع رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم من حجة الوداع ونزل غدير خم امر بروحات فقمنا فقال كانى قد دعيت فاجبت انى قد تركت فيكم الثقلين احدهما اكبر من الآخر كتاب الله تعالىٰ وعترتى فانظروا كيف تخلفونى فيهما فانهمالن يتفرقا حتى يردا

علی الحوض ثم قال ان الله مولائی وانا مولیٰ کل مومن ثم اخذ بید علی فقال من کنت مولاہ فھذا ولیہ اللھم وال من والاہ وعاد من عاداہ.

(अल-मुस्तदरक लिलहाकिम जि.3 पेज.109)

तर्जमा:- ज़ैद बिन अरक़म से रिवायत है कि जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हज्जतुल वदा (आखिरी हज) से वापस तशरीफ लाये तो ग़दीरे खम पर क़याम फरमाया, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सायबान लगाने का हुक्म दिया और वह लगाये गये फिर फरमाया मुझे लगता है कि अन्क़रीब मुझे (विसाल का) बुलावा आने को है, जिसे मैं क़बूल कर लूंगा। तहक़ीक़ मैं तुम्हारे दरमियान दो अहम चीज़ छोड़ कर जा रहा हूँ, जो एक दूसरे से बढ़कर अहमियत की हामिल हैं एक अल्लाह की किताब और दूसरी मेरी आल, अब देखना ये है कि इन दोनों के साथ तुम मेरे बाद क्या सुलूक करते हो और वह एक दूसरे से जुदा न होंगी, यहाँ तक कि हौज़े कौसर पर मेरे सामने आयेंगी। फिर फरमाया बेशक अल्लाह मेरा मौला है और मैं तमाम मोमिनीन का मौला हूँ फिर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते अली का हाथ पकड़ कर फरमाया जिसका मैं मौला हूँ उसके ये मौला हैं, ऐ अल्लाह तू उसे दोस्त रख जो उसे दोस्त रखे, और तू उससे अदावत (दुश्मनी) रख। जो उस से अदावत रखे।

हदीस नं.10

عن سعد بن ابی وقاص رضی الله عنه قال لقد سمعت رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم یقول فی علی ثلاث خصال لان یکون لی واحدة منهم احب الی من حمر النعم سمعته یقول انه بمنزلة هارون من موسیٰ ، الا انه لانبی بعدی ، وسمعته یقول لا عطین الرایة غدا رجلا یحب

الله ورسوله ویحبه الله و رسوله وسمعته یقول من کنت مولاہ فعلی مولاہ.

(कन्जुल उम्माल जि.15 पेज.1013)

तर्जमा:-हज़रते सअ़द बिन अबी वक्कास रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते अली की तीन खसलतें (आदतें) ऐसी बताई हैं कि अगर मैं उनमें से एक का भी हामिल होता तो वह मुझे सुर्ख ऊंटों से ज़्यादा महबूब होती,(पहली) आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने (एक मौक़े पर) इरशाद फरमाया अली मेरी जगह पर उसी तरह हैं जैसे हारून मूसा की जगह पर थे मगर मेरे बाद कोई नबी नहीं,(दूसरी) और फरमाया मैं कल उस शख्स को अलम अता करूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह और उसके रसूल उससे मुहब्बत करते हैं (तीसरी)(रावी कहते हैं कि) मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इस मौके पर ये फरमाते हुऐ भी सुना जिसका मैं मौला हूँ उसका अली मौला है।

हदीस नं.11

عن رفاعه بن ایاص الضبی عن ابیه عن جده قال کنا مع علی یوم الجمل فبعث الی طلحة ابن عبید الله ان لقیه ، فاتاه طلحة قال انشدک الله هل سمعت رسول الله یقول من کنت مولاہ فعلی مولاہ اللھم وال من والاہ وعاد من عاداہ قال نعم قال فلم تقتلو نی قال لم اذکر قال فانصرف طلحة. (अलमुस्तदरक लिलहाकिम जि.3 पेज.371)

तर्जमा:- रिफाआ़ बिन अयास ज़बी अपने वालिद और वह उनके दादा से रिवायत करते हैं कि हम जुमल के दिन (जंग का नाम) हज़रते अली के साथ थे, आपने तलहा बिन उबैदुल्लाह की तरफ मुलाक़ात का पैगाम भेजा। फिर तलहा उनके पास आये, आपने फरमाया कि मैं आपको

क़सम देता हूँ, क्या आप ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना है कि जिसका मैं मौला हूँ उसके अली मौला हैं, ऐ अल्लाह तू उसे दोस्त रख जो उसे दोस्त रखे, और तू उससे अदावत (दुश्मनी) रख। जो उस से अदावत रखे। हज़रते तलहा ने कहा कि हाँ। उसके बाद हज़रते अली ने कहा तो फिर मेरे साथ क्यों जंग करते हो? तलहा ने कहा मुझे ये बात याद नहीं थी रावी ने कहा फिर हज़रत तलहा वापस चले गये।

मज़कूरा अहादीस यानी हदीस नं. 6-7-8-9-10-11 इन तमाम अहादीस को अगर बनज़रे ग़ाइर (गौर से) देखें तो आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फरमान जिसका मैं मौला हूँ उसके अली भी मौला हैं, ये जुमला हज़रते अली की अज़मत व रिफअत, शानो इज़्ज़त को ज़ाहिर करता हैं क्योंकि खातिमुल अंबिया ने हज़रते अली की निस्बत अपनी जानिब की और अपना नायब क़रार दिया ज़ाहिर है कि हज़रते अली की ज़ाते बा-बरकात कोई आम ज़ात नहीं है बल्कि उनकी ज़ात जामिउस्सिफात और बहरूल खसाइस का मज़हरे आला है।

और साथ ही इस बात की तरफ भी इशारा है कि हज़रते अली मुश्किल कुशा से दुश्मनी गोया नबीऐ कौनो मकां से दुश्मनी करना है। और उनसे उलफत व मोहब्बत रखना नबी से उलफत व मुहब्बत की दलील है। बिल्कुल सराहत इस बात की है कि अली की मुहब्बत ज़ुज़ऐ ईमान (ईमान का हिस्सा) है। लिहाज़ा अपने ईमान को हज़रते अली की मुहब्बत से कामिल करना बेहद ज़रूरी है। अल्लाह तआला जुमला मुसलमानों को अली की मुहब्बत में जीने मरने का सलीक़ा अता फरमाए।

हदीस नं.12

(तारीखुल खुलफा पेज.247). انا مدينة العلم وعلى بابها.

तर्जमाः- मैं इल्म का शहर हूँ और अली उसका दरवाज़ा है।

हदीस नं.13

(तिर्मिज़ी पेज.775). انا دار الحكمة وعلى بابها.

तर्जमाः- मैं हिकमत का घर हूँ और अली उसका दरवाज़ा है।

मज़कूरा दोनों हदीसों में आक़ाऐ दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रते अली को इल्म के शहर का दरवाज़ा क़रार दिया गोया जो शहर में दाखिल होना चाहे तो उसे सबसे पहले दरवाज़े पर दस्तक देनी पड़ेगी जिस तरह बग़ैर दरवाज़ा के अन्दुरूने खाना (घर के अन्दर) रसाई नहीं हो सकती यूँ ही बग़ैर अली के नबी की गदाई नहीं मिल सकती क्योंकि जिसे अली मिल गये उसे नबी मिल गये।

हदीस नं.14

(अल-मुस्तदरक लिलहाकिम जि.3पेज.128) . انت سيد فى الدنيا والاخرة

तर्जमाः- तुम दुनिया और आखिरत में सरदार हो।

मज़कूरा हदीस में हज़रते अली को दुनिया व आखिरत दोनों का सरदार क़रार देना, इस जुमले में इस बात की सराहत होती है कि नबी का तअल्लुक़ हज़रते अली से सिर्फ इस दुनिया तक मह़दूद नहीं बल्कि ये लगाव आखिरत में भी रहेगा। यानी जिस तरह इस दुनिया में हज़रते अली नाइबे नबी हैं उसी तरह आखिरत में भी नाइबे नबी होंगे।

साथ ही साथ इसमें आम मुसलमानों के लिए खुशखबरी है कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से मुहब्बत दाइमी तौर पर कारगर साबित होती है। (नाज़)

हदीस नं.15

الحسن والحسين سيد شباب اهل الجنة وابوهما

خير منهما. (सुनने इब्ने माजा)

***तर्जमा*:-** हसन और हुसैन जन्नती नौजवानों के सरदार हैं उन दोनों के वालिदैन उनसे बेहतर हैं।

मज़कूरा हदीस में हसन व हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हुमा को जन्नत का सरदार क़रार देना और हज़रत अली को उनसे बेहतर क़रार देना इस बात की तरफ इशारा है कि हज़रते अली की अज़मत अरफ़ा व आला है क्योंकि क़ायदाऐ कुल्लिया है कि किसी शैय का वुजूद जिसके सबब होता है वह सबब उस शैय से मुम्ताज़ होता है। इसमें हसनैन करीमैन का वजूद हज़रते अली की ज़ात से है तो गोया क़ायदाऐ कुल्लिया के हिसाब से हज़रते अली की ज़ात मुम्ताज़ है।

शाने अली अहादीसे मौकूफा की रोशनी में

अब तक हमने शाने अली को उन अहादीस से मुलाहिज़ा किया है जो रसूले कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फरमूदात हैं। अब हम उन अहादीस को पेश करने जा रहे हैं जो अक़वाले सहाबा हैं क्योंकि सहाबी के क़ौल(बात) व फेअ़ल (काम) व तक़रीर को हदीसे मौकूफ कहते हैं, आइये मुलाहिज़ा करें कि अली के बारे में असहाबे किराम क्या फरमाते हैं?

क़ौले हज़रत उमर फारूके आज़म رضي الله عنه

لايفتين احد فى المسجد وعلى حاضر. (अल-इस्तिआब जि.2 पेज.475)

***तर्जमा*:-** हज़रते अली की मौजूदगी में मस्जिदे नबवी के अन्दर

हरगिज़ किसी को फतवा देने का हक़ न था।

हज़रते अबी हुज़्न बिन असवद फरमाते हैं कि एक मजनूना औरत ने शादी के छ माह के बाद बच्चा जना तो लोगों ने उस औरत पर ज़िना का इलज़ाम लगाया, हज़रते उमर ने उस औरत पर रजम(पत्थर से मारना) करने का इरादा ज़ाहिर किया। जब ये बात मौलाए कायनात हज़रत अली ने सुनी तो आपने फरमया कि छ महीने के बाद भी बच्चा हो सकता है जैसा कि इरशादे बारी तआला है। ''**وحمله وفصاله ثلاثون شهرا . (الاحقاف)**''और बच्चा हमल रहने और उसके दूध छोड़ने की मुद्दत तीस महीने हैं और दुध छुड़ाने की मु त दो बरस की है। फरमाया ''**وفصاله عامين**'' लिहाज़ा चौबीस माह दूध छुड़ाने और छ माह हमल में रहने के पूरे तीस माह हुए, हज़रते अली की इस फक़ीहाना गु तगू को समाअत करने के बाद रजम का इरादा तर्क किया और फरमाया।

''**لولا على لهلك عمر**'' यानी अगर अली न होते तो उमर हलाक हो जाता (अल-इस्तिआब जि.2, पेज.474 अर्रियाजुन नुदरा जि.2 पेज.256)

हज़रते उस्मान ग़नी رضي الله عنه का बयान

जब उनसे पूछा गया कि आपकी बैअ़त न की जाती तो आप किसकी बैअ़त का हुक्म देते तो आपने फरमाया अली की बैअ़त का हुक्म देता।

उम्मुल मोमिनीन हज़रते आईशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु अन्हा का बयान

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नतों के ज्यादा जानकार अब सिर्फ हज़रते अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की ज़ात है। (तारीखुल खुलफा पेज.175, अर्रियाजुन नुदरा जि.2 पेज.255)

उम्मुल मोमिनीन हज़रते उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा का बयान

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जब नाराज़ होते तो हज़रते अली के सिवा दूसरा गु तगू करने की जुरअत (हिम्मत) नहीं कर सकता था। (तारीखुल खुलफा पेज.175)

और फरमाने रसूल है من سب عليا فقد سبنى तर्जमा : जिसने अली को गाली दी गोया उसने मुझे गाली दी। (मिश्कात पेज.565)

हज़रते अबू हुरैरा رضي الله عنه का बयान

हज़रते उमर फारूक़ रदियल्लाहु अन्हु फरमाया करते थे कि हम सब में हज़रते अली बेहतरीन फैसले करते थे। (तारीखुल खुल्फा पेज.175)

हज़रते अबू तुफैल आमिर बिन वासला رضي الله عنه का बयान

मैं हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु के खुतबा में हाज़िर था, आपने अपने खुतबे में फरमाया:

سلونى فوالله لاتسئلونى عن شئى يكون الى يوم القيامة الا حدثتكم به. ى यानी क़यामत तक होने वाली जिस चीज़ के बारे में सवाल करो मैं उस चीज़ के बारे में तुम्हें बता दूंगा। (खालिसुल ऐतिक़ाद पेज.44)

हज़रते सईद बिन मुसैय्यब رضي الله عنه का बयान

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सहाबा में सिर्फ हज़रते अली ही फरमाया करते थे कि जो मसअला मुझ से पूछना चाहो वह पूछ लो। (तारीखुल खुलफा पेज.175)

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضي الله عنه का बयान

हज़रते अली में इल्म की कुव्वत, पुख्तगी, मज़बूती और इस्तेक़लाल

मौजूद था, खानदान भर में आपकी बहादुरी मशहूर थी, आप पहले इस्लाम लाये, आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दामाद थे, अहकामे फिक्ह व सुन्नत में माहिर थे, जंगी जुरअत और माल व दौलत की बख्शिश में मुम्ताज़ थे।

अल्लाह ने कुरआने हकीम में बाज़ मक़ामात पर दूसरे सहाबा को इताब के साथ ज़ि किया गया है लेकिन हज़रते अली को मदह (तारीफ) के साथ याद किया है। (तारीखुल खुलफा पेज.175)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه का बयान

मदीना में अहकामे वरसा व तरका (वरासत के मसाइल) और फैसला जात, फैसला सादिर करने में हज़रते अली सबसे ज़्यादा आलिम व दाना थे। (तारीखुल खुलफा पेज.175)

हम लोग आपसे में बात करते थे कि मदीना में सबसे अच्छा फैसला हज़रते अली करते थे।

हज़रते सअ़द बिन अबी वक्कास رضي الله عنه का बयान

फरमाने रसूल है कि जिसने अली को तकलीफ दी गोया उसने मुझे तकलीफ दी (तारीखुल खुलफा पेज.175)

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه का बयान

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते अली से फरमाया कि जिस तरह कु फार से उस वक्त जंग की जबकि उन्होंने नुज़ूले कुरआन से इन्कार किया था उसी तरह तुम उन लोगों से जंग करो जो कुरआने करीम की हिफाज़त न करेंगे। (तारीखुल खुलफा पेज.176)

हमारे नज़दीक हज़रते अली से बुग़्ज़ रखना मुनाफिक़ की अलामत

थी (शाने अहले बैत)

हज़रते अम्मार बिन यासिर ﷺ का बयान

प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फरमाने आलीशान है ऐ अली! सब से ज्यादा बदबख्त दो आदमी हैं एक अहमरिया समूद की क़ौम का वह शख्स था जिसने हज़रते सालेह की ऊंटनी की कोंचें काट डाली थीं और दूसरा वो शक़ी होगा जो ऐ अली तुमको क़त्ल करेगा। और खून से तुम्हारी दाढ़ी तर होगी। (तारीखुल खुलफा पेज.177)

हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ का बयान

कुरआन शरीफ में अल्लाह तबारक व तआला ने जो इरशाद फरमाया فاسئلوا اهل الذكر ان كنتم لاتعلمون यानी तुम सवाल करो अहले इल्म से अगर तुम ना जानते हो। इस आयते करीमा के तअल्लुक से हज़रते अली फरमाते थे قال علی ابن ابی طالب نحن اهل الذكر यानी हम अहले ज़ि है। (शाने अहले बैत पेज.54)

हज़रते अनस ﷺ का बयान

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जन्नत तीन आदमियों अली, अम्मार और सलमान की मुश्ताक़ है। (अल-मुस्तदरक लिल हाकिम जि.3 पेज.137)

खुसूसियाते अली

शाने अली में आयाते कुरआनिया व अहादीसे मरफूआ व मौकूफा के मुताला के बाद हमारे अज़हान व कुलूब मुनव्वर हो जाते हैं। मुहब्बत अली इश्के रसूल में इज़ाफा होता है। यक़ीनन आपकी ज़ात जामियुस्सिफात थी, बेशुमार खसाइले महमूदा व औसाफे हमीदा की हामिल थी। लेकिन उनकी ज़ाते

बा-बरकात में पाँच ऐसी खासियतें हैं जो दूसरे से मुम्ताज़ हैं। वह यह हैं।

(1) आप ही बच्चों में सबसे पहले ईमान लाये।

(2) वह अरबी व अजमी में पहले ऐसे शख्स हैं जिन्होंने हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी।

(3) आप वह हैं जिनके हाथ में हर जंग के मौके पर हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का अलम (झण्डा) हुआ करता था।

(4) आप वह हैं जो उस वक्त भी हुजूर के साथ रहे जबकि दूसरों के लिए आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का साथ देना मुश्किल हो गया।

(5) आप ने ही नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को गुस्ल दिया और क़ब्रे मुबारक में उतारा।

अक़वाले अली ब-ज़बाने अली

हज़रत शेरे खुदा अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की ज़ात जामिउस्सिफात थी इस लिए जब भी उनके अक़वाल, इरशादात और फरमूदात पर नज़रे मुहब्बत डालते हैं तो हक़ीक़त नज़रों के सामने आती है कि आप की ज़ात ने मुसलमानों के लिए हर मैदान में रहबरी का काम किया है। ज़ैल में आपके अक़वाल को पेश किया जाता है। ताकि इसके ज़रिये एक ज़ी शऊर इन्सान अपनी ज़िन्दगी में इन्क़लाब ला सके और इस पर अमल पैरा होकर कामयाब ज़िन्दगी बसर कर सके। अपने आपको खुदा का बन्दा और गुलामे रसूल कहलवाने में फख्र हासिल करे।

1. जब दुनिया किसी पर महरबान होती है तो दूसरे शख्स की खूबियाँ भी उसको दे देती है और जब उस से मुंह मोड़ती है तो अपनी खूबियाँ भी छीन लेती है।

2. लोगों के साथ मिलाप रखो ताकि जब तुम मर जाओ तो वह तुम पर रोऐं और जब तक तुम ज़िन्दा रहो वह तुम से मुहब्बत का बरताव करते रहें।
3. अगर तुम अपने दुश्मन पर क़ाबू पा जाओ तो क़ाबू पाने के शु या में उसे मुआ़फ कर दो।
4. वह शख्स नाकाम है जो अपने भाईयों की दोस्ती हासिल न कर सके लेकिन सबसे ज्यादा वह नाकाम है जो अपने भाइयों की दोस्ती हासिल करने के बाद फिर उसे खो दे।
5. अगर तुम इनाम देने वाले या नेअ़मत देने वाले का शुरू में ही शु या अदा नहीं करोगे तो आइन्दा हासिल होने वाली नेअ़मत खो दोगे।
6. तुम साहिबे मुरव्वत (यानी अक़लमन्द, मुअज़्ज़म व मुकर्रम) लोगों की लग़ज़िशों को नज़र अन्दाज़ कर दिया करो क्योंकि उनमें जो शख्स लग़ज़िश खाता है तो अल्लाह तआला अपने दस्ते क़ुदरत से उठाता है।
7. बड़े से बड़े गुनाहों का क फारा ये है कि मज़लूमों की मदद की जाए और मुसीबत ज़दा लोगों की तकलीफों को दूर किया जाये।
8. कोई शख्स किसी बात को चाहे कितना ही क्यों न छुपाऐ लेकिन कभी न कभी बिला इरादा बिला सोचे समझे उसकी ज़बान या उसके चेहरे से ज़ाहिर हो जायेगी।
9. जब तक बीमारी की हालत में हो सकता है काम किये जाओ।
10. बेहतरीन तक़वा(परहेज़गारी) ये है कि अपने तक़वा को छुपाया जाये।
11. सखी बनो मगर फुजूल खर्ची से बचो, मियाना रवी (बीच का रास्ता) इख्तेयार करो लेकिन कन्जूस न बनो।
12. आक़िल की ज़बान उसके दिल की फरमाबरदार होती है और बेवकूफ का दिल उसके ज़बान का फरमाबरदार होता है।
13. अगर किसी गलती से तुमको तकलीफ पहुंची है तो अल्लाह के नज़दीक ये गलती उस नेकी से अच्छी है जिससे तुम को घमण्ड आये।
14. नेक दिल इन्सान के हमला से डरो जब वह भूका हो और कमीने शख्स के हमला से बचो जब वह पेट भरा हो।
15. सखावत वह है जो बिला मांगे की जाऐ, मांगने पर सखावत नहीं होती है।

16. अक़ल से बढ़कर कोई दोस्त नहीं, जिहालत से बढ़कर कोई फक़ीरी नहीं। अदब से बढ़कर कोई मीरास (वरासत) नहीं, मशवरा से बढ़कर कोई मददगार नहीं।
17. सब्र दो किस्म का होता है एक सब्र उस चीज़ पर जिसे तू ना पसन्द करता है और एक सब्र उस चीज़ पर तू जिसे पसन्द करता है।
18. क़नाअत वह माल है जो कभी खत्म नहीं होता।
19. माल शहवतों का मा । है।
20. जिस शख्स ने तुझे डराया वह उस शख्स की तरह है जिस ने तुझे खुश खबरी दी।
21. किसी हाजतमन्द को थोड़ी चीज़ देने से न शरमाओ क्योंकि बिलकुल ही न देना उस से बहुत बुरा है।
22. ना शु ी फक़ीरी का ज़ीना (सीढ़ी) है और शु दौलत का।
23. जब अक़ल कामिल (मुकम्मल तौर पर) हो जाती है तो कलाम घट जाता है (यानी अक़लमन्द लोग बहुत कम गु तगू किया करते हैं)
24. हिकमत मोमिन की गुमशुदा चीज़ है इस लिए अगर हिकमत मुनाफिकों के पास भी मिले तो वहाँ से भी हासिल करो।
25. किसी शख्स की क़ीमत वही होती है जो वह खुद अपने लिए मुकर्रर करता है।
26. जिस शख्स ने अपने और अल्लाह के दरमियान मुआमला सही रखा, अल्लाह तआला उसके और दूसरे लोगों के दरमियान में भी मआमला सही रखेगा, जिसने अपनी आखिरत सुधार ली अल्लाह उसकी दुनिया भी सुधार देगा। जिस शख्स का न स उसका निगहबान हो अल्लाह तआला उस पर अपना निगहबान मुक़र्रर कर देता है।
27. अपने जिस्मों की सर्दी की शुरूआती दौर और आखिरी दौर में हिफाज़त करो क्योंकि सर्दी जिस्मों पर वही अमल करती है जो दरख्तों पर करती है शुरू में उन्हें जला देती है अखीर में उन्हें हरा भरा कर देती है।
28. कोई दोस्त उस वक्त तक दोस्त नहीं बन सकता जब तक वह तीन

मौक़ो पर अपने भाई की बुराई बयान करने से बाज़ न आ जाये। (1) उसकी मुफलिसी के वक्त। (2) उसकी गैर मौजूदगी में (3) उसके मरने के बाद।

29. फि में रहना और अपने आपको फि में डालना अपने आपको को आधे बुढ़ापे पर ले जाना है।

30. इन्सान अपनी ज़बान के नीचे छुपा रहता है।

31. अकसर वक्तों एक लुक़्मा कई लुक़्मों को रोक देता है।

32. जब तुम अपने दिल से बुराई को खत्म कर दोगे तब जा के तुम दूसरों के दिल से भी बुराई का किला खत्म कर दोगे।

33. जिस तरह जिहालत की बात कहने में कोई क़िस्म की भलाई नहीं इसी तरह हिकमत की बात पर खामोंश रहने में भी भलाई नहीं है।

34. ऐ आदम की औलाद! तू अपनी मुकर्ररा रोज़ी से ज़्यादा जो कुछ कमाऐ उस में तेरे भाई तेरे शरीक हैं और उस माल पर निगहबान की हैसियत रखता है।

35. हर बरतन आखिरकार भर ही जाता है लेकिन इल्म का बरतन कभी नहीं भरता।

36. तकलीफ को बर्दाश्त करना सीखो क्योंकि जो शख्स तकलीफ बर्दाश्त करने की ताक़त नहीं रखता वह सारी उम्र मलामत करता है।

37. नेक इन्सान का बेहतर काम ये है कि दूसरे लोगों के उन उयूब से चश्म पोशी करे जो उसके इल्म में आये।

38. वह लोग जो अपनी किसी गर्ज़ को सामने रखकर अल्लाह की इबादत करते हैं वह ताजिरों की जैसी इबादत करते हैं, जो अल्लाह से डर कर इबादत करते हैं गुलामों की सी इबादत करते हैं और जो लोग अल्लाह की नेअ़मतों के शु या में इबादत करते हैं वह आज़ाद बन्दों की सी इबादत करते हैं।

39. जो शख़्स छोटे हाथ से सखावत करता है उसे लम्बे हाथ से दिया जाता है। इसका मतलब ये है कि जो शख़्स नेकी की राह में अपना माल चाहे वह कितना थोड़ा ही क्यों न हो खर्च करता है तो अल्लाह

तआला उसे बहुत बढ़ चढ़कर इनाम देता है।

40. दुनिया की कड़वाहट पन आखिरत की मिठास पन है। और दुनिया की मिठास पन आखिरत की कड़वाहट पन है।

41. थोड़ा काम जिस पर हमेशगी इख्तेयार की जाऐ उस बड़े काम से बेहतर है जो इन्सान को थका दे और आखिर उसे छोड़ना पड़े।

42. बेवकूफ के साथी न बनो क्योंकि वह अपने कामों को तुम्हारी नज़रों में अच्छा दिखाने की कोशिश करेगा और ये भी चाहेगा कि तुम भी उसी तरह बन जाओ।

43. तेरे दोस्त तीन हैं और तेरे दुश्मन भी तीन हैं। तेरे दोस्त ये लोग हैं। (1) तेरा दोस्त (2) तेरे दोस्त का दोस्त (3) तेरे दुश्मन का दुश्मन। इसी तरह तेरे दुश्मन ये हैं। (1) तेरा दुश्मन (2) तेरे दोस्त का दुश्मन (3) तेरे दुश्मन का दोस्त।

44. इन्सान अपने बेटे के खोने पर सो सकता है लेकिन माल के खत्म होने पर सब्र नहीं कर सकता और न ही सो सकता है। (मतलब ये है कि इन्सान अपने औलाद की मौत पर सब्र तो कर सकता है लेकिन माल छिन जाने पर सब्र नहीं कर सकता)

45. तेरे आँख का पानी (शर्म) उस वक्त तक बाक़ी रह सकता है जब तक तू सवाल न करे जूंही सवाल करेगा ये पानी (शर्म) ढल जायेगा।

46. जो शख्स बग़ावत की तलवार बनाता है वह उसी तलवार से क़त्ल किया जाता है जो शख्स गहरे पानी में घुसता है गर्क (डूब) हो जाता है जो शख्स बुराईयों के अड्डो पर जाता है वह भी बुराईयों का जड़ बन जाता है।

47. जो शख्स बातूनी (ज़्यादा बात करने वाला) होगा वह ज़्यादा ग़लतियाँ करेगा। और जो ज़्यादा ग़लतियाँ करेगा उसकी शर्म कम होगी, जिसकी शर्म कम होगी उसकी परहेज़गारी में फर्क हो जायेगा, जिसकी परहेज़गारी में फर्क़ आ जायेगा उसका दिल मर जायेगा, और जिसका दिल मर जायेगा वह दोज़ख में दाखिल होगा।

48. जो शख़्स दूसरे लोगों के ऐब देखकर उन्हें बुरा जानता है लेकिन

फिर खुद वही ऐब इख्तेयार कर लेता है तो उस से बड़ा कोई बेवकूफ नहीं होता।

49. जिस चीज़ का तुझे इल्म नहीं उसके बारे में कोई ल ज़ ज़बान से न निकाल।
50. जिसने हक़ का मुक़ाबला किया वह शिकस्त खायेगा यानी वह हारेगा।
51. दो शख्स कभी सैर नहीं होते (यानी उनका पेट नहीं भरता) (1) इल्म का तालिब (2) माल का तालिब।
52. जो शख्स चार बातें करेगा, चार चीज़ों से कभी महरूम नहीं रहेगा। (1) दुआ करने वाला मंज़िल पाने से। (2) तौबा करने वाला क़बूलियत से (3) इस्तिग़फार करने वाला मग़फिरत से। (4) शु करने वाला ज़्यादती से।
53. अमीरी में सफर भी वतन है और ग़रीबी में वतन भी सफर है। यानी अमीर इन्सान जहाँ भी सफर करेगा तो वह मुसाफिर हर जगह को अपना वतन ही मानता है और वहीं ज़िन्दगी की ख्वाहिश रखता है। और गरीब इन्सान अगरचे वतन में रहता है मगर मेहनत व मज़दूरी की वजह से हमेशा भाग दौड़ में लगा रहता है जिसकी वजह से घर भी होने के बावजूद पराये वतन परदेस के मानिन्द लगता है।
54. कितनी अक़्लें हैं जो हाकिमों की ख़्वाहिशात के नीचे दबी होती हैं।
55. आदमी की ईमानदारी का पता उसकी अमानतदारी से लगता है।
56. तुम्हारा भाई वही है जो तकलीफ में भी तुम्हारी मदद करे।
57. दौलतमन्दी का इज़्हार शु से होता है।
58. क़र्ज को अदा करना दीन की बातों में से है।
59. अपनी औलाद को अदब सिखाओ उन्हें नफअ़ देगा।
60. खतावार इन्सान के साथ भलाई से पेश आओ, अच्छाई सरदारी को पहुंचोगे।
61. इस ज़माने के लोग ऐबों की जुस्तजू में रहते हैं।
62. न स को सब्र के बाद कामयाबी की खुशखबरी दो।
63. माल की बरकत अदाये ज़कात में है।
64. दुनिया को आखिरत के बदले बेच डालो नफ़अ़ उठाओगे।

65. इन्सान का अल्लाह के खौफ से रोना आँखों की ठण्डक है।
66. काम सुबह ही शुरू कर दो कामयाबी को पाओगे।
67. सनीचर और जुमेरात को बहुत बरकत है।
68. अपनी अच्छाई को एहसान जता कर खत्म न करो।
69. खुदा पर भरोसा कर लो ये तुम्हारे लिए काफी है।
70. आदमी का नमाज़ में सुस्ती करना ज़ुअ़फे ईमान (ईमान की कमज़ोरी) की वजह से होता है।
71. आखिरत का सवाब दुनिया की नेअ़मतों से बेहतर है।
72. हिल्म व बुर्दबारी में इन्सान की खूबी व जमाल है।
73. झूठ व बातिल ज़्यादा रह नहीं सकता और हक़ व सच हमेशा क़ायम रहता है।
74. बात की अच्छाई व खूबी मुख्तसर करने में है।
75. फक़ीरों के साथ बैठो शु गुज़ारी तुम में बढ़ जायेगी।
76. मर्द का ज़ेवर अदब है खुश अखलाक़ी भी अच्छी चीज़ है।
77. न से अम्मारा के मुखालिफ बन बौठो चैन से रहोगे।
78. हर शख्स के साथ बैठने से उसकी अक़्ल का पता चलता है।
79. दिल की दवा क़ज़ाऐ इलाही (अल्लाह के फैसले) पर राज़ी रहना है।
80. इन्सान की अक़्ल की पहचान उसका क़ौल (बात) है और असलियत की पहचान उसका फेअ़ल (काम)।
81. गुस्सा को क़ाबू में रखा करो, अन्जाम बहुत अच्छा होगा और आदमी की लज़्ज़त लालच में हैं।
82. फसीहुल्लिसान होना और अच्छी गु तगू करना पूंजी है।
83. इल्म का मर्तबा सबसे ऊपर है।
84. तुम्हारा रिज़्क़ तुमको खुद ढूंडता है चैन से रहो।
85. न स पर ग़लबा के वक़्त हक़ की रिआयत कर।
86. सालेहीन की कसरत रहमत के सबब में हैं।
87. इल्म वाले का ज़ोहद उसके हक़ में रहमत है।
88. इन्सान की सलामती ज़बान बन्द रखने में है।

89. उम्मत के सरदार फक़ीह लोग हैं।
90. इल्म का ऐब डींग मारना है।
91. दौलत मन्द का बुख्ल अज़ाब है।
92. कुरआन पढ़ना सफाऐ दिल में हैं।
93. तन्दुरुस्ती रोज़ा रखने में है।
94. नेकों की सोहबत इख्तेयार करो, बदों से महफूज़ रहोगे।
95. हलाल का खाना दिल की रोशनी है।
96. ज़बान की चोट तलवार की ज़ख्म से ज़्यादा सख्त है।
97. दिल की तंगी हाथ की तंगी से ज़्यादा सख्त है।
98. अदब की तलाश सोने की तलाश से बहुत दर्जा बेहतर है।
99. जिसने उम्मीदें कम की उसकी ज़िन्दगी बढ़ गयी।
100. हक़ बात को मान लेना दीन के क़ानून को मानना है।
101. आदमी को नसीहत करने वाली मौत है। काफिर सख़ी मुस्लिम बख़ील से बेहतर है।
102. अपनी बात में नर्मी पैदा करो लोग तुम से मुहब्बत करने लगेंगे।
103. हसद करने वालों को सुकून नहीं मिलता।
104. मौत को भूल जाना दिल के लिए ज़ंग (खराबी) होता है।
105. जिसमें खुलूस नहीं उसका कोई दीन नहीं।
106. झूठ की कोई इज़्ज़त नहीं फासिक़ की कोई जगह नहीं, चुग़लखोर पल भर में महीनों के फितना का असर पैदा कर देता है।
107. जो मुक़ र में होता है वह ज़रूर मिलता है।

मुन्दरज़ा बाला नसीहतों से अपने कुलूब को मुनव्वर कीजिए और अपनी ज़िन्दगी को संवारिये, अल्लाह हम सबको सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फरमाए, आमीन बिजहि सै यदिल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

मा–खज़ व मराजेअ़

1.	कुरआने करीम	
2.	कन्जुल ईमान	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान
3.	तफसीर खज़ाइनुल इरफान	सदरुल अफाज़िल अल्लामा सैयद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी
4.	अलकश्फ वल बयान फि तफसीरिल कुरआन	इमाम अबू इस्हाक़ अहमद बिन मुहम्मद बिन इबराहीम सअलबी
5.	तफसीरे खाज़िन	अल्लाम इब्ने कबीर
6.	तफसीरे कश्शाफ	अबुल कासिम मुहम्मद बिन अमर जमखशरी
7.	जामिउल कुरआन अन तावीलि आयातिल कुरआन	अबू जाफर बिन मुहम्मद जरीर तबरी
8.	तफसीरे नईमी	हकीमुल उम्मत मु ती अहमद यार खान नईमी
9.	बुखारी शरीफ	अल्लामा अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी
10.	शिफा शरीफ	अल–क़ाज़ी अबुल फज़ल अयाज़
11.	तिर्मिज़ी शरीफ	अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी
12.	इब्ने माजा	इमाम अबू अब्दुल्लाह इब्ने माजा
13.	मुसनद अहमद बिन हम्बल	इमाम अहमद बिन हम्बल
14.	मिश्कात शरीफ	शैख वलीउ ीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह तबरेज़ी
15.	कन्जुल उम्माल	अलाउ ीन अली बिन हुसामु ीन अलमुत्तक़ी
16.	अल-मुस्तदरक लिल- हाकिम	इमाम हाफिज़ अबू अब्दुल्लाह अलहाकिम
17.	अल–इस्तिआब	अबू उमर यूसुफ बिन अब्दुल्लाह
18.	अल–इसाबतु फी तमीज़िस्सहाबा	शहाबु ीन अबुल फज़ल अहमद बिन अली इब्ने हजर असक़लानी

19.	तारीखे दिमश्क़ इब्ने असाकिर	हाफिज़ अबुल कासिम अली इब्ने हसन बिन हैबतुल्लाह अश्शाफई
20.	हिलयतुल औलिया	इमाम अबू नईम अहमद बिन अब्दुल्लाह असफहानी
21.	सीरते इब्ने हिशाम	अल्लामा अबू मुहम्मद अब्दुल मलिक इब्ने हिशाम बिन अ यूब
22.	अर्रियाजुन नुदरा	
23.	खालिसुल एतिक़ाद	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान
24.	अल्लिमू औलादकुम मुहब्बता आले बैतिन्नबी	
25.	तारीखुल खुलफा	अल्लामा जलालु ी बिन अब्दुर्रहमान सुयूती
26.	शाने अहले बैत	अल्लामा मुहम्मद शफी उकाड़वी
27.	अस्सवाकिुल महरिक़ा	अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती

बराऐ राबिता

मुरात्तब

मुहम्मद मन्ज़ूर मुस्तफा नाज़ अशरफी

खतीबो इमाम
सुन्नी जामा हनफिया मस्जिद
मोहल्ला टीबा, मकराना।

मुदर्रिस
जामिया हनफिया नजमुल उलूम
जामिया रोड, मकराना।

रिहाइशः काशाना-ए-अशरफ, मुत्तसिल इस्लामिया मस्जिद, मोहल्लाह इस्लाम पुरा, मकराना जिला नागौर(राजस्थान)

Mob.09529430565, 09214828214, E-mail: naazmf786@gmail.com

मन्क़बत

शहरे इल्मे नबी के है दर मुर्तज़ा
बा-खुदा इल्म के बहरो बर मुर्तज़ा

दुख्तेर शाहे कौनैन के ताजे सर।
सैयदाने जिनां के पिदर मुर्तज़ा

फातहे लश्करे शर व खैबर शिकन
कि शुजाअत के भारी शजर मुर्तज़ा

उनके दर से विलायत का बाड़ा बटे।
सारे वलियों के हैं राह बर मुर्तज़ा

खानदाने नुबूव्वत की है जो बक़ा।
उस घराने के थे बाम व दर मुर्तज़ा

है लक़ब उनका शेरे खुदा बिलयकीं
दीने अहमद के शेरे बबर मुर्तज़ा

'नाज़' भी आपके मदह ख्वानों में है।
इस पे भी हो करम की नज़र मुर्तज़ा।।



नतीजा-ए-फि
मुहम्मद मन्ज़र मुस्तफा ``नाज़''